بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -27

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

16 मोहर्रम 1447 हिज्री कमरी, 02 वफ़ा 1405 हिज्री शम्सी, 02 जुलाई 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا۔ ﴿سورۃ الاحزاب:57﴾

अनुवाद : निश्चय ही अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान लाने वालो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और खूब अधिक सलाम भेजो।

दुआ की स्वीकृति के लिए दरूद शरीफ़ आवश्यक है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

عَنۡ فَضَالَۃَ بۡنِ عُبَیۡدٍ، قَالَ: بَیۡنَا رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ قَاعِدًا إِذۡ دَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّی. فَقَالَ: اللّٰہُمَّ اغۡفِرۡ لِیۡ وَارۡحَمۡنِیۡ، فَقَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ: "عَجِلۡتَ أَیُّہَا الۡمُصَلِّیۡ، إِذَا صَلَّیۡتَ فَقَعَدۡتَ فَاحۡمَدِ اللّٰہَ بِمَا ہُوَ أَہۡلُہٗ، وَصَلِّ عَلَیَّ ثُمَّ ادۡعُہٗ". قَالَ: ثُمَّ صَلَّی رَجُلٌ آخَرُ بَعۡدَ ذٰلِکَ، فَحَمِدَ اللّٰہَ وَصَلَّی عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ: "أَیُّہَا الۡمُصَلِّیۡ ادۡعُ تُجَبۡ". قَالَ أَبُوۡ عِیۡسٰی: وَہٰذَا حَدِیۡثٌ حَسَنٌ، وَقَدۡ رَوَاہُ حَیۡوَۃُ بۡنُ شُرَیۡحٍ، عَنۡ أَبِیۡ ہَانِئٍ الۡخَوۡلَانِیِّ، وَأَبُوۡ ہَانِئٍ اسۡمُہٗ حُمَیۡدُ بۡنُ ہَانِئٍ، وَأَبُوۡ عَلِیٍّ الۡجَنۡبِیُّ اسۡمُہٗ عَمۡرُو بۡنُ مَالِکٍ.

हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था। एक व्यक्ति आया। उसने नमाज़ पढ़ी और दुआ करते हुए कहा: "ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर और मुझ पर दया कर।" तब हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ नमाज़ पढ़ने वाले! तूने जल्दबाज़ी की। जब तू नमाज़ पढ़कर बैठे, तो पहले खुदा तआला की हम्द और स्तुति करे। फिर मुझ पर दरूद भेजे। उसके बाद जो भी दुआ वह करना चाहे, करे।"
रावी कहते हैं कि फिर एक दूसरा व्यक्ति आया। उसने खुदा तआला की हम्द और स्तुति की तथा नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजा। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

اَیُّہَا الۡمُصَلِّیۡ اُدۡعُ تُجَبۡ

"ऐ नमाज़ पढ़ने वाले! दुआ कर, वह स्वीकार की जाएगी।"

(सुनन अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुद-दअवात, बाब: मा जा' फ़ी जामिअिस्सलवात 'अनिन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हदीस संख्या 3476)

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो पवित्र और पूर्णतः निर्मल थे, निःसंदेह वह जन्नत के सरदारों में से हैं।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"हमारा यह विश्वास है कि यज़ीद अपवित्र स्वभाव का, संसार का कीड़ा और अत्याचारी था। और जिन अर्थों में किसी व्यक्ति को मोमिन कहा जाता है, वे अर्थ उसमें बिल्कुल मौजूद नहीं थे। मोमिन बन जाना कोई सरल बात नहीं है। खुदा तआला ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाता है:

قَالَتِ الۡاَعۡرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا وَلٰکِنۡ قُوۡلُوۡۤا اَسۡلَمۡنَا

(अल-हुजुरात: 15)

अर्थात्, "देहात के लोगों ने कहा कि हम ईमान ले आए। उनसे कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूँ कहो कि हमने आज्ञाकारिता स्वीकार की है।"

मोमिन तो वे लोग होते हैं... जिनके हृदय पर ईमान अंकित कर दिया जाता है, और जो अपने खुदा तथा उसकी प्रसन्नता को हर वस्तु पर प्राथमिकता देते हैं। वे खुदा की ख़ातिर तक़वा के सूक्ष्म और कठिन मार्गों को अपनाते हैं, उसकी मुहब्बत में पूरी तरह डूब जाते हैं, और हर उस चीज़ से, जो मूर्ति की तरह उन्हें खुदा से रोकती है चाहे वह नैतिक बुराई हो, पापपूर्ण कर्म हों, या लापरवाही और आलस्य हो अपने आपको बहुत दूर कर लेते हैं।

लेकिन अभागे यज़ीद को ये बातें कहाँ प्राप्त थीं। संसार की मुहब्बत ने उसे

खुदा तआला ने इमाम हुसैन का प्रतिशोध ले लिया

ऐतिहासिक घटनाओं से पता चलता है कि कर्बला की घटना के बाद खुदा तआला ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो के हत्यारों को अपनी पकड़ में लिया और उन्हें अत्यन्त शिक्षाप्रद दण्ड मिला। लेकिन खुदा की ओर से प्रतिशोध लेने का एक तरीका यह भी होता है कि अत्याचारी की संतान स्वयं अपने बाप-दादाओं के अत्याचारों और उनकी गलतियों को स्वीकार करे तथा उनकी उत्तराधिकारिता से इंकार कर दे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी पुस्तक "ख़िलाफ़त-ए-राशिदा" में यज़ीद की मृत्यु के बाद घटित ऐसी ही एक घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि:

(पृष्ठ 1 से जारी तबर्रुकात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

"यज़ीद की मृत्यु के बाद जब उसका बेटा सिंहासन पर बैठा, जिसका नाम भी अपने दादा के नाम पर मुआविया ही था, तो लोगों से बैअत लेने के बाद वह अपने घर चला गया और चालीस दिनों तक बाहर नहीं निकला। फिर एक दिन वह बाहर आया और मिम्बर पर खड़े होकर लोगों से कहने लगा कि मैंने तुमसे अपने हाथ पर बैअत तो ली है, लेकिन इसलिए नहीं कि मैं अपने आपको तुमसे बैअत लेने के योग्य समझता हूँ, बल्कि इसलिए कि मैं चाहता था कि तुम्हारे बीच कोई फूट न पड़े। उस समय से लेकर अब तक मैं घर में यही विचार करता रहा कि यदि तुममें कोई ऐसा व्यक्ति हो जो लोगों से बैअत लेने का अधिक अधिकारी हो, तो मैं यह शासन उसे सौंप दूँ और स्वयं इस उत्तरदायित्व से मुक्त हो जाऊँ। लेकिन बहुत विचार करने के बाद भी मुझे तुममें ऐसा कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया।

इसलिए ऐ लोगो! यह बात अच्छी तरह सुन लो कि मैं इस पद का अधिकारी नहीं हूँ। और मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मेरा बाप और मेरा दादा भी इस पद के अधिकारी नहीं थे। मेरा बाप दर्जे में हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो से बहुत नीचे था

शेष 11पर

दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

बुनियादी प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न: यूके से एक महिला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में पूछा कि सूरह यूसुफ़ में आता है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मालिक की पत्नी ने स्त्रियों के हाथों में छुरियाँ पकड़ा दी थीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने अपने व्याख्यात्मक नोट में लिखा है कि उन स्त्रियों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने हाथों की पहुँच से दूर पाया, इसलिए उन्होंने अपने हाथ नहीं काटे। प्रश्न यह है कि मिस्र के अज़ीज़ की पत्नी ने उन स्त्रियों को छुरियाँ क्यों पकड़ा दी थीं?

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 7 जुलाई 2023 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर प्रदान किया।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया:

उत्तर: मिस्र का अज़ीज़ राज्य के बड़े अधिकारियों में से था। उसके घर में होने वाली दावत निश्चित रूप से कोई साधारण दावत नहीं थी, बल्कि बहुत ही शानदार और वैभवपूर्ण दावत रही होगी। इसलिए उस समय की परंपरा के अनुसार भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई होगी, जिसमें खाने के लिए छुरी-काँटे भी रखे गए होंगे या मेहमानों के सामने फल आदि काटने के लिए छुरियाँ रखी गई होंगी।

चुनाँचे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो इस आयत की व्याख्या करते हुए سِكِّينًا का अनुवाद करते हैं:

"सिक्कीना: छुरी। फल काटने के लिए।"

(हक़ायकुल फ़ुरक़ान, भाग द्वितीय, पृष्ठ 392)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु छुरियाँ रखने का कारण बताते हुए फ़रमाते हैं:

"उसने उन्हें भोजन या नाश्ते की दावत दी। मेज़ आदि सजाई गई और प्रत्येक के सामने एक-एक छुरी रख दी गई। (इससे पता चलता है कि पुराने समय से ही भोजन में छुरियों का प्रयोग होता आया है और आज की तरह यह भी नियम था कि पहले छुरियाँ रख दी जाती थीं, फिर खाने की वस्तुएँ लाई जाती थीं।)"

(तफ़्सीर कबीर, भाग तृतीय, पृष्ठ 307, मुद्रित क़ादियान, 2004)

अतः मिस्र के अज़ीज़ की पत्नी ने अपनी हैसियत के अनुसार अपनी सहेलियों के लिए उत्तम दावत का प्रबंध किया, जिसमें फल तथा अन्य मेवे काटने के लिए छुरियाँ भी रखी गई थीं।

अब इस आयत के शब्द "उन्होंने अपने हाथ काट लिए" के बारे में भी बता दूँ कि इसकी दोनों प्रकार की व्याख्याएँ जमाअत के साहित्य में मिलती हैं।

"हाथ काटने" का एक अर्थ यह है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर उनकी पवित्रता और श्रेष्ठ चरित्र के कारण वे आश्चर्य और तन्मयता की अवस्था में अपनी उँगलियाँ दाँतों के नीचे दबा बैठीं। उन्होंने उनकी पवित्रता और श्रेष्ठ चरित्र के कारण उन्हें अपने बुरे इरादों की पहुँच से दूर पाया।

दूसरा अर्थ यह भी सही है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के अद्भुत सौंदर्य के प्रभाव से वे इतनी चकित हो गईं कि फल काटने के स्थान पर अपने ही हाथ काट बैठीं।

चुनाँचे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं:

"और वास्तव में वही तन्मयता का प्रभाव था, जिसके कारण ज़ुलैखा की सहेलियों ने अपनी उँगलियाँ काट ली थीं।"

(मकतूबात-ए-अहमद, भाग प्रथम, पृष्ठ 594, नया संस्करण)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो इस विषय में फ़रमाते हैं: قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ यह एक मुहावरा है। इसका अर्थ है कि उन्होंने अत्यधिक आश्चर्य प्रकट किया और आश्चर्य में हाथ मुँह में डालकर काट लिया। कुछ लोगों ने इसका अर्थ यह किया है कि अत्यधिक आश्चर्य, सौंदर्य के प्रभाव और मुग्ध हो जाने के कारण उन्होंने फलों के स्थान पर अपने ही हाथ काट लिए।

(परिशिष्ट अख़बार बदर क़ादियान, अंक 10, भाग 9, दिनांक 30 दिसंबर 1909, पृष्ठ 130)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तफ़्सीर सगीर में इस आयत का निम्नलिखित अनुवाद किया है:

"फिर जब उन्होंने उसे देखा तो उसे अत्यंत महान व्यक्तित्व वाला मनुष्य पाया और (उसे देखकर आश्चर्य में) अपने हाथ काट लिए, अर्थात अपनी उँगलियाँ दाँतों में दबा लीं। और कहा कि (यह व्यक्ति तो केवल) अल्लाह के लिए (बुराई करने से) डरने वाला है। यह साधारण मनुष्य नहीं है, बल्कि एक सम्मानित फ़रिश्ता है।"

(तफ़्सीर सगीर, पृष्ठ 293 तथा हाशिया)

इसी प्रकार तफ़्सीर कबीर में इस आयत की व्याख्या करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"यह जो कहा गया है कि उन्होंने अपने हाथ काट लिए, इसके दो अर्थ हो सकते हैं। एक यह कि उनकी सादगी और श्रेष्ठ चरित्र को देखकर वे इतनी तन्मय हो गईं कि कुछ के हाथों में छुरियों से घाव लग गए। दूसरा अर्थ यह हो सकता है कि उन्होंने आश्चर्य में अपनी उँगलियाँ दाँतों में दबा लीं कि क्या हम ऐसे व्यक्ति के बारे में इस प्रकार की बातें करती थीं? वास्तव में अरबी भाषा में عَضَّ الْأَنَامِل अर्थात उँगलियों को दाँतों से काटना आश्चर्य प्रकट करने का मुहावरा है। अरबी में कभी-कभी पूरे अंग के लिए उसके किसी भाग का शब्द भी प्रयोग कर लिया जाता है। इसलिए संभव है कि अयदी (हाथ) शब्द अनामिल (उँगलियाँ) के स्थान पर प्रयोग हुआ हो।

तालमूद, जो यहूदियों की हदीसों की पुस्तक है, उसमें लिखा है कि अज़ीज़ की पत्नी ने उन स्त्रियों के सामने संतरे रखे थे और उन्हें छीलने का आदेश दिया। वे लगातार हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखती रहीं और असावधानी के कारण उनके हाथ घायल हो गए।"

(तफ़्सीर कबीर, भाग तृतीय, पृष्ठ 307, मुद्रित क़ादियान, 2004)

अतः "हाथ काटने" के शब्दों की दोनों व्याख्याएँ सही हैं। दोनों अपने-अपने मुहावरे तथा प्रसंग के अनुसार भिन्न अर्थों पर आधारित हैं।

रूहानी ख़ज़ाइन

प्रश्न: कनाडा से एक मित्र ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में पूछा कि "रूहानी ख़ज़ाइन" नाम किसने रखा था?

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 11 जुलाई 2023 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर प्रदान किया।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया:

उत्तर: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखी गई पुस्तकों का संकलन पहली बार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त काल में 1957 में प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। उसी समय इस संकलन का नाम "रूहानी ख़ज़ाइन" रखा गया। इसके बाद ख़िलाफ़त-ए-सालिसा के प्रारम्भिक वर्षों में 1968 में इसका प्रकाशन पूरा हो गया।

इस संकलन के प्रकाशन से पहले तथा प्रकाशन के दौरान विभिन्न समयों पर रोज़नामा अल-फ़ज़्ल, रब्वा में इसके संबंध में घोषणाएँ प्रकाशित होती रहीं और सद्र अंजुमन अहमदिया रब्वा की वार्षिक रिपोर्टों में भी इसका उल्लेख मिलता है।

(रोज़नामा अल-फ़ज़्ल रब्वा, 17 मार्च 1957, पृष्ठ 8; रोज़नामा अल-फ़ज़्ल रब्वा, 20 अप्रैल 1958, पृष्ठ 4; वार्षिक रिपोर्ट सद्र अंजुमन अहमदिया रब्वा, 1957–58, पृष्ठ 58)

इसके अतिरिक्त, इस संकलन के प्रकाशन से पहले रोज़नामा अल-फ़ज़्ल रब्वा में अश-शिर्कतुल इस्लामिया लिमिटेड की ओर से एक घोषणा प्रकाशित हुई, जिसमें इस विद्वतापूर्ण संकलन का इन शब्दों में उल्लेख किया गया:

"ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह इल्हाम किया:

'اُكْتُبْ وَلْيُطْبَعْ وَلْيُرْسَلْ فِي الْأَرْضِ'

अर्थात जो इल्हाम और ज्ञान आपको प्रदान किए गए हैं, उन्हें लिख लो, फिर उन्हें प्रकाशित किया जाए और संसार भर के लोगों तक पहुँचाया जाए।

अश-शिर्कतुल इस्लामिया लिमिटेड की स्थापना का मूल उद्देश्य क़ुरआन-ए-करीम के ज्ञान का प्रचार करना तथा उन विद्वतापूर्ण और आध्यात्मिक ख़ज़ानों को प्रकाशित करना है, जो ख़ुदा तआला ने इस युग के महान सुधारक, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को प्रदान किए।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

वह ख़ज़ाने जो हज़ारों साल से दबे हुए थे,
अब मैं देता हूँ यदि कोई उसका इच्छुक मिले।

इसलिए जो मित्र अश-शिर्कतुल इस्लामिया लिमिटेड के शेयर ख़रीदते हैं, वे निश्चय ही ख़ुदा तआला की उस इच्छा को पूरा करते हैं, जो उपर्युक्त इल्हाम में प्रकट की गई है।"

(रोज़नामा अल-फ़ज़्ल रब्वा, 23 जुलाई 1956, पृष्ठ 7)

और क्योंकि यह विद्वतापूर्ण तथा आध्यात्मिक कार्य हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के मुबारक दौर में प्रारम्भ हुआ था, इसलिए पूरे विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि इस विद्वतापूर्ण संकलन का नाम भी "रूहानी ख़ज़ाइन" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की स्वीकृति और मार्गदर्शन से ही रखा गया होगा। इसके पीछे निस्संदेह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपर्युक्त शेर ही प्रेरणा रहा होगा।

(साभार: अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 29 मार्च 2025)

ख़ुत्बः जुमअः

हम इस बात पर पूर्ण विश्वास और ईमान रखते हैं कि संसार में यदि कोई पूर्ण और सर्वश्रेष्ठ मनुष्य पैदा हुआ है, तो वे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। न तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले आपके समान कोई पूर्ण मनुष्य पैदा हुआ और न ही आपके बाद ऐसा कोई पैदा हो सकता है।

ख़ुदा तआला के अधिकारों को पूरा करने, बंदों के अधिकारों को अदा करने तथा सभी सद्गुणों और समस्त मानवीय गुणों के सर्वोच्च आदर्श आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र व्यक्तित्व में एकत्र थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जो भी गुण देखिए, उसमें उसकी सर्वोच्च मिसाल मौजूद थी, जो न किसी दूसरे मनुष्य में पहले थी, न अब है और न कभी होगी।

इन्हीं गुणों और श्रेष्ठ आचरणों में से एक गुण विनम्रता और नम्र स्वभाव का भी है, जिसकी सबसे ऊँची मिसाल हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन में मिलती है। आपने अपने अनुयायियों को भी हमेशा यही उपदेश दिया कि एक सच्चे मोमिन को विनम्रता के इस गुण को सदैव अपने जीवन का हिस्सा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 मई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हम इस बात पर पूर्ण विश्वास और ईमान रखते हैं कि यदि संसार में कोई पूर्ण और सर्वश्रेष्ठ मनुष्य पैदा हुआ है, तो वे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। न आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले कोई आपके समान पूर्ण मनुष्य पैदा हुआ और न ही आपके बाद कभी हो सकता है। ख़ुदा तआला के अधिकारों को पूरा करने, उसके बंदों के अधिकारों को अदा करने तथा सभी नैतिक गुणों और मानवीय विशेषताओं का सर्वोच्च स्तर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के व्यक्तित्व में एकत्र था। कोई भी सद्गुण ले लीजिए, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में उसका सबसे ऊँचा स्तर मौजूद था, जो न किसी दूसरे मनुष्य में था, न है और न कभी होगा। इन्हीं गुणों और नैतिक विशेषताओं में से एक गुण विनम्रता और नम्रता का भी है, जिसका सर्वोच्च उदाहरण आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन में मिलता है। आपने अपने अनुयायियों को भी हमेशा यही शिक्षा दी कि एक सच्चे मोमिन को विनम्रता को अपने जीवन का स्थायी हिस्सा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस महान गुण के बारे में ख़ुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में इन शब्दों में घोषणा करने का आदेश दिया:

"कह दो कि मैं तो केवल तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हूँ।"

(अल-कहफ़ : 111)

अर्थात् उन्हें कह दो कि मैं भी तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हूँ। यद्यपि ख़ुदा तआला ने आपको अंतिम और पूर्ण शरीअत लाने वाले नबी का महान पद प्रदान किया था, फिर भी आपसे यही कहलवाया गया कि कह दो, मैं एक मनुष्य हूँ और एक विनम्र इंसान हूँ। इसी संबंध में आज मैं कुछ हदीसें और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूँगा, जिनसे विभिन्न अवसरों पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस विनम्रता का प्रकट होना दिखाई देता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बढ़कर संसार में किसी पूर्ण मनुष्य का उदाहरण न कभी रहा है और न क़यामत तक हो सकता है। फिर देखो कि इतने महान और प्रभावशाली चमत्कार मिलने के बाद भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हमेशा बंदगी ही रही। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम विनम्र मनुष्य बनकर रहे, विनम्र बंदे बनकर रहे और बार-बार यही फ़रमाते रहे कि 'मैं तो केवल तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हूँ।' यहाँ तक कि कलिमा-ए-तौहीद में भी अपनी बंदगी की स्वीकृति को एक आवश्यक भाग ठहरा दिया, जिसके बिना कोई व्यक्ति मुसलमान ही नहीं हो सकता। सोचो, फिर सोचो! जब सबसे श्रेष्ठ मार्गदर्शक का जीवन हमें यह शिक्षा दे रहा है कि ख़ुदा के सबसे निकट पहुँच जाने पर भी अपनी बंदगी का स्वीकार नहीं छोड़ा, तो फिर किसी और के लिए ऐसे विचार करना या अपने मन में ऐसी बातें लाना बिल्कुल निरर्थक और व्यर्थ है।"

(रिपोर्ट जलसा सालाना 1897, पृष्ठ 140)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"खोखली शेख़ी, अनुचित घमंड और बड़प्पन से बचना चाहिए तथा विनम्रता और नम्रता को अपनाना चाहिए। देखो! आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वास्तव में सबसे बड़े और सबसे अधिक सम्मान के अधिकारी थे, फिर भी आपकी विनम्रता और नम्रता का एक उदाहरण क़ुरआन-ए-करीम में मौजूद है। लिखा है कि एक नेत्रहीन व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में आकर क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा करता था। एक दिन आपके पास मक्का के प्रमुख लोग और नगर के सरदार एकत्र थे तथा आप उनसे बातचीत में व्यस्त थे। बातचीत में व्यस्त होने के कारण कुछ देर हो गई, तो वह नेत्रहीन व्यक्ति उठकर चला गया। यह एक साधारण-सी बात थी, लेकिन ख़ुदा तआला ने इस संबंध में पूरी एक सूरह उतार दी। इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वयं उसके घर गए, उसे अपने साथ लाए और अपनी मुबारक चादर बिछाकर उसे उस पर बैठाया।

वास्तविक बात यह है कि जिन लोगों के हृदय में ख़ुदा की महानता बस जाती है, वे अवश्य ही विनम्र और नम्र बन जाते हैं, क्योंकि वे हमेशा ख़ुदा की बेनियाज़ी से डरते और काँपते रहते हैं।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 10, पृष्ठ 298, संस्करण 2022)

अतः यह केवल एक घटना नहीं है, जिसका उल्लेख क़ुरआन-ए-करीम में हुआ है या जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान किया है, बल्कि यह हमारे लिए एक शिक्षा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुम्हारे लिए सर्वोत्तम आदर्श हैं। यदि तुम उनके प्रेम का दावा करते हो, तो तुम्हें भी विनम्रता और नम्रता के सर्वोच्च स्तर प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक मोमिन को विनम्रता की वास्तविकता और उस पर अमल करने की ओर ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर फ़रमाते हैं। इस हदीस को हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

"हर मनुष्य के सिर के साथ दो ज़ंजीरें बंधी होती हैं। एक ज़ंजीर आकाश की ओर और दूसरी धरती की ओर होती है। जब कोई बंदा विनम्रता और नम्रता अपनाता है, तो वह फ़रिश्ता जिसके हाथ में आकाश वाली ज़ंजीर होती है, उसे ऊपर उठा लेता है। बंदा जितना विनम्र होकर झुकता है, ख़ुदा तआला उसे उतना ही ऊँचा स्थान देता है। और जब वह घमंड और उद्दंडता करता है, तो धरती वाली ज़ंजीर उसे नीचे खींच लेती है।"

(अल-जामिअ लि-शुअबिल ईमान लिल बैहक़ी, भाग 10, पृष्ठ 456, हदीस 7791, मक्तबतुर-रुश्द)

घमंड करने वाले का फिर कोई भी कर्म स्वीकार नहीं होता। वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में गिरा हुआ होता है।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से ही एक और रिवायत है कि

"जब कोई बंदा विनम्रता अपनाता है, तो ख़ुदा तआला उसे सातवें आकाश तक ऊँचा उठा देता है।"

(कंज़ुल उम्माल, भाग 2, ज़ुज़ 3, पृष्ठ 49, हदीस 5717, दारुल-कुतुब

अल-इम्बिय्या, 2004)

अतः यदि हम चाहते हैं कि हमें ख़ुदा तआला का निकटता प्राप्त हो, तो विनम्रता उसके लिए अत्यंत आवश्यक है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"सदक़ा देने से धन कम नहीं होता। और ख़ुदा किसी व्यक्ति को क्षमा करने के कारण सम्मान के अतिरिक्त कुछ नहीं देता, अर्थात् क्षमा करने से सम्मान बढ़ता है। और जो कोई केवल ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए विनम्रता अपनाता है, ख़ुदा उसे ऊँचा दर्जा प्रदान करता है।"

(जामे तिर्मिज़ी, अब्वाबुल बिर्रि वस्सिलह, बाब मा जा फ़ित्तवाज़ो, हदीस 2029)

अतः ये मूलभूत बातें एक मोमिन के लिए बताई गई हैं कि सदक़ा और आर्थिक बलिदान देने से धन कम नहीं होता, बल्कि बढ़ता है। इसलिए अपने मन से यह भ्रम निकाल दो कि आर्थिक बलिदान देने से तुम्हारा धन घट जाएगा। क्षमा और दरगुज़र करने से सम्मान कम नहीं होता, बल्कि बढ़ता है। यदि लोग इस सत्य को समझ लें, तो समाज में होने वाले बहुत-से झगड़े और विवाद स्वयं समाप्त हो जाएँगे। फिर फ़रमाया कि विनम्रता अपनाने से ख़ुदा तआला ऊँचा स्थान देता है। जितने अधिक विनम्र बनोगे, ख़ुदा तआला उतना ही ऊँचा दर्जा देगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अपने जीवन में विनम्रता का स्तर क्या था?

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक बार एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित करते हुए कहा "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! ऐ हमारे सरदार के पुत्र! ऐ सबसे श्रेष्ठ के पुत्र!"

इस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया

"लोगो! तक़वा को अपने ऊपर अनिवार्य कर लो। शैतान तुम्हें बहका न दे। मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ, ख़ुदा का बंदा और उसका रसूल हूँ। ख़ुदा की क़सम! मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं कि तुम मुझे उस दर्जे से बढ़ाकर बयान करो, जो ख़ुदा तआला ने मुझे दिया है।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, भाग 4, पृष्ठ 394, मुस्नद अनस बिन मालिक, हदीस 12579, आलमुल कुतुब, बैरूत)

इस प्रकार ख़ुदा तआला ने जो घोषणा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से करवाई थी, उसे आपने अपने व्यावहारिक जीवन से भी सिद्ध करके दिखा दिया।

फिर आपकी अपनी विनम्रता की पराकाष्ठा का एक और उदाहरण हदीस में मिलता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना:

"किसी भी व्यक्ति को उसका अपना कर्म हरगिज़ जन्नत में प्रवेश नहीं दिला सकता।"

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या आपको भी नहीं?"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"नहीं, मुझे भी नहीं; सिवाय इसके कि ख़ुदा तआला मुझे अपने फ़ज़्ल और अपनी रहमत से ढाँप ले। इसलिए जो भी कर्म करो, उसे पूरी लगन और श्रेष्ठ ढंग से करो तथा केवल ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए करो। और तुममें से कोई भी कभी मृत्यु की कामना न करे। यदि वह नेक है तो संभव है कि वह नेकी में और अधिक बढ़ जाए, और यदि वह बुरा है तो संभव है कि वह तौबा करके ख़ुदा तआला की नाराज़गी को दूर कर दे।"

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल-मरज़ा, बाब: रोगी का मृत्यु की कामना करना, हदीस 5673, अनूदित, भाग 14, पृष्ठ 45–46, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

फिर एक रिवायत में आता है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि गरीबों और निर्धनों से प्रेम किया करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी दुआ में यह कहते हुए सुना है

"ऐ मेरे अल्लाह! मुझे निर्धन की अवस्था में जीवित रख, निर्धन की अवस्था में ही मुझे मृत्यु दे और क़यामत के दिन मुझे निर्धनों के समूह में उठाना।"

(सुनन इब्न माजा, किताबुज़-ज़ुहृद, बाब: गरीबों की संगति, हदीस 4126)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत अधिक ख़ुदा का ज़िक्र किया करते थे और कभी व्यर्थ बातों में समय नहीं बिताते थे। अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बहुत अधिक ख़ुदा का स्मरण करते थे। नमाज़ लंबी पढ़ते और ख़ुत्बा छोटा देते। और आपको यह बिल्कुल बुरा नहीं लगता था कि आप किसी विधवा या निर्धन व्यक्ति के साथ चलें और उसकी आवश्यकता पूरी करें।

(सुनन नसाई, किताबुल-जुमुआ, बाब: ख़ुत्बा संक्षिप्त रखने का वर्णन, हदीस 1415)

विनम्रता का यह भी एक स्तर था। इबादत के उच्चतम मानक तो थे ही, लेकिन विनम्रता का यह हाल था कि किसी भी निर्धन या विधवा की बात सुनने के लिए आप पूरे धैर्य और सहनशीलता के साथ उसे समय दिया करते थे।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मदीना की दासियों में से यदि कोई साधारण दासी भी अपनी किसी आवश्यकता के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ पकड़ लेती, तो वह आपको जहाँ चाहती अपने साथ ले जाती।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल-अदब, बाब: घमंड, अनूदित, भाग 14, पृष्ठ 489–490, रिवायत 6072, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक महिला, जिसकी समझ में कुछ कमी थी, उसने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मुझे आपसे एक काम है।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"ऐ अमुक की माँ! जिस गली में चाहो मुझे ले चलो, यहाँ तक कि मैं तुम्हारा काम पूरा कर दूँ।"

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके साथ एक रास्ते पर चले गए, यहाँ तक कि उसने अपनी आवश्यकता बता दी और उसका जो भी काम था, वह पूरा कर दिया गया।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल-फ़ज़ाइल, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का लोगों के निकट होना और उनका आपसे बरकत प्राप्त करना, अनूदित, भाग 12, पृष्ठ 235, रिवायत संख्या 4279, प्रकाशित: नूर फ़ाउंडेशन)

बहरहाल, एक रिवायत में उस महिला का नाम उम्मे ज़ुफ़र बताया गया है, जो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की सेविका थीं। वे बहुत अधिक बुद्धिमान नहीं थीं। उनकी समझ में कुछ कमी थी। कभी-कभी कुछ लोग किसी बात को अच्छी तरह समझ नहीं पाते। इसका यह अर्थ नहीं कि ख़ुदा न करे वे मानसिक रूप से विकलांग थीं, बल्कि इतना था कि उनकी समझ सामान्य लोगों जितनी तीव्र नहीं थी। फिर भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके भावों और भावनाओं का पूरा ध्यान रखा।

(अल-कौकबुल वह्हाज, शरह सहीह मुस्लिम, भाग 23, पृष्ठ 155, मक्तबा दारुल-मिन्हाज)

एक और रिवायत में आता है। हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं:

"मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए रवाना हुआ और मदीना पहुँचा। मस्जिद में दाख़िल होकर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर सलाम किया।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा:

"तुम कौन हो?"

मैंने अर्ज़ किया:

"मैं अदी बिन हातिम हूँ।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुरंत खड़े हो गए और मुझे अपने घर की ओर ले चलने लगे। रास्ते में एक वृद्ध महिला आ गई। उसने काफ़ी देर तक अपनी आवश्यकता आपके सामने रखी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके लिए वहीं खड़े रहे और धैर्यपूर्वक उसकी बात सुनते रहे।

अदी बिन हातिम कहते हैं, मैंने अपने मन में कहा, "यह व्यक्ति किसी भी प्रकार का बादशाह नहीं हो सकता। बादशाह इस तरह गरीब लोगों के लिए खड़े नहीं रहते। बादशाहों में ऐसे गुण नहीं होते।"

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे अपने घर ले गए। वहाँ एक मोटा-सा गद्दा उठाकर मेरी ओर डाल दिया और फ़रमाया:

"इस पर बैठ जाओ।"

घर में जो एकमात्र गद्दी (कुशन) थी, वह भी आपने अपने अतिथि को दे दी। मैंने अर्ज़ किया:

"या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप ही इस पर विराजें।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"नहीं, तुम बैठो।"

अंततः मैं उस पर बैठ गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वयं भूमि पर बैठ गए।

अदी बिन हातिम कहते हैं, मैंने अपने मन में कहा, "यह व्यवहार किसी बादशाह का नहीं हो सकता। यह तो एक अत्यंत विनम्र और सरल मनुष्य का आचरण है।"

(अस-सीरतुन-नबविय्या, इब्न हिशाम, पृष्ठ 854, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 2001)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बच्चों से भी प्रेम करते थे और उनके साथ भी विनम्रता का व्यवहार करते थे। उन्हें स्वयं पहले सलाम किया करते थे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अंसार के लोगों के पास जाते, उनके बच्चों को सलाम करते, उनके सिर पर स्नेह से हाथ फेरते और उनके लिए दुआ करते थे।

(अस-सुननुल कुबरा लिन्नसाई, किताबुल मनाक़िब, बाब: अबनाउल अंसार, हदीस 8349, भाग 5, पृष्ठ 92, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या)

हज़रत इब्न मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि एक बार एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उससे बात करने लगे तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रभाव और सम्मान के कारण उसके कंधे काँपने लगे। तब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया

"घबराओ नहीं। मैं कोई बादशाह नहीं हूँ। मैं तो उस स्त्री का बेटा हूँ जो सूखा हुआ मांस खाया करती थी।"

(सुनन इब्न माजा, किताबुल अतइमा, बाब: क़दीद (सूखे मांस) का वर्णन, हदीस 3312)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"देखो! हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सफलताएँ ऐसी थीं कि पहले के सभी नबियों में उनकी कोई मिसाल नहीं मिलती। लेकिन खुदा तआला ने आपको जितनी-जितनी सफलताएँ प्रदान कीं, आप उतनी ही अधिक विनम्रता अपनाते गए। एक बार का उल्लेख है कि एक व्यक्ति को पकड़कर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में लाया गया। आपने देखा कि वह भय से बहुत काँप रहा था। जब वह निकट आया तो आपने अत्यंत कोमलता और प्रेम से उससे पूछा और फ़रमाया, 'तुम इतने डरे हुए क्यों हो? आखिर मैं भी तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हूँ और एक वृद्धा का बेटा हूँ।'"

(मलफ़ूज़ात, भाग 10, पृष्ठ 217–218, संस्करण 2022)

बाहरी दिखावे और औपचारिकता से भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बहुत ऊपर थे।

इसका एक उदाहरण मदीना की हिजरत के समय की घटना में मिलता है। यह घटना हम कई बार सुन चुके हैं। रिवायत में आता है कि जब हिजरत के समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना पहुँचे, तो यह समाचार सुनते ही मुसलमान अपने हथियार लेकर दौड़ पड़े और हर्रा के मैदान में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वागत किया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें साथ लेकर दाहिनी ओर मुड़े और बनू अम्र बिन औफ़ के मुहल्ले में जाकर ठहरे। यह सोमवार का दिन था और रबीउल अव्वल का महीना था। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों से मिलने के लिए खड़े हो गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चुपचाप बैठे रहे। अंसार में से वे लोग, जिन्होंने पहले कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं देखा था, आए और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो को सलाम करने लगे। यहाँ तक कि धूप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पड़ने लगी। तब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो उठे और अपनी चादर से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर छाया कर दी। उसी समय लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचान लिया।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबु मनाक़िबुल अंसार, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके साथियों की हिजरत, अनूदित, भाग 7, पृष्ठ 400, रिवायत 3906, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को मिंबर पर यह कहते हुए सुना कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना

"मेरी प्रशंसा में सीमा से आगे न बढ़ो, जैसे ईसाइयों ने मरियम के बेटे की प्रशंसा में अति कर दी। मैं तो केवल खुदा का बंदा हूँ। इसलिए तुम यही कहा करो कि वह खुदा का बंदा और उसका रसूल है।"

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबु अहादीसुल अंबिया, बाब: खुदा तआला के इस कथन की व्याख्या "और किताब में मरियम का उल्लेख करो...", अनूदित, भाग 6, पृष्ठ 426, हदीस 3445, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

इसी प्रकार हज़रत अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने पिता से रिवायत की है कि

"हमसे इस्लाम के प्रेम के कारण प्रेम करो। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि मेरे स्थान और पद को आवश्यकता से अधिक ऊँचा मत करो, क्योंकि खुदा तआला ने मुझे रसूल बनाने से पहले अपना बंदा बनाया हुआ था।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"इस्लाम के प्रेम के कारण प्रेम करो।"

(अल-मुअजमुल कबीर लित्तबरानी, भाग 3, पृष्ठ 138–139, हदीस 2889, मक्तबा इब्न तैमिय्या)

मुतर्रिफ़ बयान करते हैं कि मेरे पिता ने मुझे बताया

"मैं बनू आमिर के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। हमने कहा, 'आप हमारे सरदार हैं।'

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

'वास्तविक सरदार तो खुदा तबारक व तआला है।'

हमने कहा, 'आप हममें श्रेष्ठता और उपकार करने में सबसे बढ़कर हैं।'

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

'अपनी बात कहो, या अपनी आवश्यकता बताओ। शैतान तुम्हें ऐसी बातें कहने का साहस न दिलाए।'

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब: अत्यधिक प्रशंसा की नापसंदगी, रिवायत 4806)

यह था आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विनम्रता का स्तर कि आपने तुरंत उन्हें रोक दिया और फ़रमाया कि इन बातों को छोड़ो। ऐसा न हो कि बाद में यही बातें तुम्हारे भीतर कुछ बुराइयाँ पैदा कर दें। तुम जिस वास्तविक उद्देश्य से आए हो, वही बताओ और मेरे बारे में अनुचित प्रकार की बढ़ा-चढ़ाकर बातें न करो, जबकि वास्तव में आपकी प्रशंसा में ऐसे शब्द कहे भी जा सकते थे।

हज़रत रुबय्यि बिन्त मुअव्विज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि जब मेरी विदाई (रुख़्सती) हुई, तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे घर के भीतर आए और मेरे बिस्तर पर उसी तरह बैठ गए, जैसे तुम इस समय मेरे पास बैठे हो। (वे जिस व्यक्ति से यह घटना सुना रही थीं, उससे उन्होंने यह कहा।) उसी समय हमारी कुछ लड़कियाँ दफ़ बजाने लगीं और मेरे उन बुज़ुर्गों की प्रशंसा के गीत गाने लगीं जो बद्र के युद्ध में शहीद हुए थे। उन गीतों में एक लड़की ने यह कहा

"हमारे बीच ऐसे नबी हैं जो जानते हैं कि कल क्या होने वाला है।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत फ़रमाया

"यह बात छोड़ दो और वही गाओ जो पहले गा रही थीं।"

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुन निकाह, बाब: निकाह और वलीमे में दफ़ बजाना, हदीस 5147, भाग 13, पृष्ठ 84–85, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

अर्थात यह बात सही नहीं कि मुझे ग़ैब का ज्ञान है। ग़ैब का पूर्ण ज्ञान तो केवल खुदा तआला को ही है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रिवायत की है कि आपने फ़रमाया

"किसी व्यक्ति को यह नहीं कहना चाहिए कि मैं यूनुस बिन मत्ता से श्रेष्ठ हूँ।"

यद्यपि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वास्तव में श्रेष्ठ थे, फिर भी आपने इस प्रकार की तुलना से मना फ़रमाया और अत्यंत विनम्रता का परिचय दिया।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबु तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब: "हमने तुम्हारी ओर उसी प्रकार वह्य भेजी जैसे नूह की ओर भेजी..." (सूरह अन-निसा: 163), रिवायत 4603, अनूदित, भाग 10, पृष्ठ 227, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

इसी प्रकार हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने कहा

"या ख़ैरल बरिय्यह!" अर्थात, "ऐ समस्त सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति!"

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

"वे तो इबराहीम अलैहिस्सलाम थे।"

(सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब: इबराहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के गुणों का वर्णन, अनूदित, भाग 12, पृष्ठ 280, रिवायत 4353, प्रकाशित: नूर फ़ाउंडेशन)

निश्चित रूप से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ैरुल बरिय्यह थे, हैं और समस्त सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ हैं। सभी रसूलों में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सबसे अधिक श्रेष्ठ हैं, लेकिन आपने अत्यंत विनम्रता का परिचय देते हुए इस सम्मान को हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की ओर संबद्ध कर दिया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विनम्रता का एक और उदाहरण इस प्रकार मिलता है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि एक बार एक व्यक्ति ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तीन बार आवाज़ दी और हर बार आपने उत्तर दिया

"लब्बैक, लब्बैक।" अर्थात् "मैं उपस्थित हूँ, मैं उपस्थित हूँ।"

(मजमउज़्-ज़वाइद व मनबउल फ़वाइद, किताब: अलामातुन नुबुव्वत, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विनम्रता, भाग 8, पृष्ठ 421, रिवायत 14224, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2001)

जब लगभग पूरा अरब विजय हो चुका था, तब अरब के इस विजेता ने एक लाख से अधिक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ हज किया। उस समय भी आपकी विनम्रता का यह हाल था कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक साधारण काठी वाले ऊँट पर सवार होकर हज किया। आपके ऊपर जो चादर थी, उसकी कीमत केवल चार दिरहम के बराबर थी, बल्कि उससे भी कम थी। अर्थात वह बहुत साधारण चादर थी। और आपने दुआ की

"ऐ मेरे अल्लाह! यह ऐसा हज हो जिसमें न कोई दिखावा हो और न ही नाम और प्रसिद्धि पाने की इच्छा।"

(सुनन इब्न माजा, किताबुल मनासिक, बाब: साधारण सवारी पर हज करना, रिवायत संख्या 2890)(अस-सीरतुल हलबिय्या, भाग 3, पृष्ठ 361, मक्तबा दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा और आपके नामों की विशेषता का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं

"'अहमद' नाम सौंदर्य का प्रतीक है और इसके मुकाबले में 'मुहम्मद' नाम महिमा और प्रताप का प्रतीक है।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ये दो नाम हैं। फिर फ़रमाते हैं

"'मुहम्मद' नाम में प्रिय होने का रहस्य छिपा हुआ है।"

अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खुदा तआला के प्रिय हैं, क्योंकि आप सभी प्रशंसाओं के अधिकारी हैं। और सभी प्रशंसाओं का अधिकारी होना महिमा और महानता की माँग करता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सभी प्रशंसाओं का समुच्चय हैं, और यह तभी संभव है जब खुदा तआला की महानता आप पर प्रकट हो तथा जिस उच्च स्थान पर खुदा तआला ने आपको स्थापित किया है, उसका भी प्रकट होना आवश्यक हो।

लेकिन

"'अहमद' नाम में प्रेम करने वाले का रहस्य छिपा हुआ है, क्योंकि प्रशंसा करने वाले के लिए विनम्रता, प्रेम और दीनता आवश्यक है। यही सौंदर्य की अवस्था है।"

अर्थात 'अहमद' नाम सौंदर्य का प्रतीक इसलिए है कि उसमें प्रेम का रंग है, और प्रेम विनम्रता की माँग करता है।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में प्रिय होने की शान भी थी, जिसकी माँग 'मुहम्मद' नाम करता है।"

अर्थात 'मुहम्मद' नाम इसी बात की ओर संकेत करता है कि आप खुदा तआला के प्रिय हैं।

और "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में प्रेम करने वाले की शान भी थी, जिसकी माँग 'अहमद' नाम करता है।"

अर्थात 'अहमद' नाम का अर्थ यह है कि आपमें खुदा तआला से सर्वोच्च प्रेम करने की क्षमता भी थी। क्योंकि जो सच्ची प्रशंसा करता है, उसके लिए अपने प्रिय से प्रेम करना आवश्यक है। कोई व्यक्ति किसी की सच्ची और पूर्ण प्रशंसा तभी कर सकता है जब वह उसका प्रेमी, बल्कि उसका सच्चा अनुरागी हो। और प्रेमी बनने के लिए विनम्रता आवश्यक है। किसी का प्रेमी बनने के लिए अहंकार नहीं, बल्कि नम्रता चाहिए। रोब और घमंड से प्रेम व्यक्त नहीं होता।

फिर फ़रमाते हैं

"यही सौंदर्य की अवस्था है, जो अहमदीयत की वास्तविकता के लिए आवश्यक है।"

'मुहम्मद' नाम में जो प्रिय होने का गुण छिपा हुआ था, वह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के माध्यम से प्रकट हुआ। और जो लोग अपमान करने वाले और घमंडी थे, उन्हें खुदा के प्रिय के प्रताप ने परास्त कर दिया।

(अरबईन, संख्या 4, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 17, पृष्ठ 447–448)

अर्थात जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खुदा तआला के प्रिय थे, तो खुदा तआला ने अपना प्रताप भी प्रकट किया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के माध्यम से वह प्रताप दिखाया तथा शत्रुओं को परास्त कर दिया।

फिर इस विषय को और स्पष्ट करते हुए एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुबारक नामों में एक रहस्य यह है कि 'मुहम्मद' और 'अहमद' इन दोनों नामों में दो अलग-अलग प्रकार की पूर्णताएँ हैं। 'मुहम्मद' नाम महिमा और महानता की ओर संकेत करता है, क्योंकि जिसकी अत्यधिक प्रशंसा की जाती है, उसमें प्रिय होने का रंग होता है। इसलिए उसमें महिमा का रंग होना आवश्यक है। लेकिन 'अहमद' नाम अपने भीतर प्रेमी होने का रंग रखता है, क्योंकि प्रशंसा करना प्रेमी का कार्य होता है। वह अपने प्रिय की प्रशंसा करता रहता है। इसलिए जिस प्रकार 'मुहम्मद' नाम प्रिय होने की महिमा और महानता को प्रकट करता है, उसी प्रकार 'अहमद' नाम प्रेमी होने की अवस्था में दीनता और विनम्रता को प्रकट करता है।"

यानी 'अहमद' नाम से विनम्रता और नम्रता का गुण प्रकट होता है।

फिर फ़रमाते हैं

"इसमें एक रहस्य यह भी था कि आपके जीवन को दो भागों में बाँट दिया गया।"

एक मक्का का जीवन, जो तेरह वर्षों का था, और दूसरा मदीना का जीवन, जो दस वर्षों का था।

मक्का के जीवन में 'अहमद' नाम की झलक थी। उस समय आपके दिन-रात खुदा तआला के सामने रोने, गिड़गिड़ाने, सहायता माँगने और दुआ करने में बीतते थे। विनम्रता और दीनता अपने चरम पर थी। यद्यपि बाद के जीवन में भी यही स्थिति रही, लेकिन उस समय विशेष रूप से यही गुण दिखाई देता था।

यदि कोई व्यक्ति आपके मक्का के जीवन का गहराई से अध्ययन करे तो उसे पता चलेगा कि आपने उस समय खुदा तआला के सामने जितनी विनती, प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट की, वैसी अपने प्रिय की खोज में किसी प्रेमी ने कभी नहीं की और न कभी कर सकेगा। खुदा तआला के प्रेम में जिस प्रकार आप स्वयं को मिटा चुके थे, उसका यह सर्वोच्च उदाहरण है। यद्यपि आपका पूरा जीवन इसी रंग से भरा हुआ था, लेकिन विशेष रूप से मक्का के समय यह रंग अधिक स्पष्ट था।

फिर फ़रमाते हैं कि आपकी यह विनती अपने लिए नहीं थी, बल्कि संसार की स्थिति को देखकर थी। खुदा की उपासना का नामोनिशान मिट चुका था। आपके हृदय में खुदा तआला पर ईमान के कारण जो आनंद और प्रेम उत्पन्न हो चुका था, आप स्वाभाविक रूप से चाहते थे कि पूरी दुनिया भी उस आनंद और प्रेम से भर जाए। लेकिन जब आप संसार की स्थिति देखते, तो लोगों की प्रकृति और योग्यताएँ ऐसी हो चुकी थीं कि सामने बड़ी कठिनाइयाँ और मुसीबतें थीं। संसार की इसी दशा पर आप रोते और गिड़गिड़ाते थे, यहाँ तक कि ऐसा लगता था मानो आपकी जान ही निकल जाएगी।

इसी ओर संकेत करते हुए खुदा तआला ने फ़रमाया

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (अश-शुअरा: 4)

"शायद तुम इस दुख में अपनी जान ही दे बैठोगे कि वे ईमान क्यों नहीं लाते।"

यह आपकी विनम्रता और प्रार्थना से भरी हुई जीवनावस्था थी, और यही 'अहमद' नाम का प्रकट होना था। उस समय आप एक महान ध्यान और एकाग्रता में लगे हुए थे।

फिर यही ध्यान मदीना के जीवन में 'मुहम्मद' नाम की महिमा के रूप में प्रकट हुआ, जैसा कि इस आयत से स्पष्ट होता है

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ (इबराहीम: 16)

अर्थात

"उन्होंने विजय के लिए प्रार्थना की और हर घमंडी तथा सत्य का विरोध करने

वाला असफल और अपमानित हो गया।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 62–63, संस्करण 2022)

अर्थात मदीना में आने के बाद जब शत्रुओं ने अत्याचार किए, तब 'मुहम्मद' नाम की महिमा प्रकट हुई। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के माध्यम से शत्रुओं का विनाश हुआ। उन्होंने खुदा तआला से विजय माँगी और खुदा तआला ने उन्हें विजय प्रदान की तथा आपके शत्रुओं को नष्ट कर दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जीवन जितना कुछ स्थानों पर विनम्रता और नम्रता की पराकाष्ठा पर दिखाई देता है, उतना ही यह भी स्पष्ट होता है कि आप रूहुल-कुदुस की सहायता और प्रकाश से समर्थ तथा प्रकाशित थे। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने आचरण और व्यवहार से यह बात सिद्ध कर दी। यहाँ तक कि आपके नूर और बरकतों का दायरा इतना व्यापक है कि सदा-सर्वदा तक उसी का नमूना और प्रतिबिंब दिखाई देता रहेगा।"

आज भी जो कुछ खुदा तआला का फ़ज़्ल और अनुग्रह प्राप्त हो रहा है, वह केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आज्ञापालन और अनुसरण के कारण ही प्राप्त होता है।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैं सच्चाई से और अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि कोई व्यक्ति वास्तविक नेकी करने वाला, खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाला तथा उन अनुग्रहों, आध्यात्मिक ज्ञानों, सत्यताओं और आध्यात्मिक अनुभवों का अधिकारी नहीं बन सकता, जो आत्मशुद्धि के उच्च स्तर पर प्राप्त होते हैं, जब तक कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पूर्ण अनुसरण में स्वयं को पूरी तरह समर्पित न कर दे।"

और इसका प्रमाण स्वयं खुदा तआला के इस वचन से मिलता है

قُلۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ (आल-इमरान: 32)

"कह दो, यदि तुम खुदा से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, तब खुदा भी तुमसे प्रेम करेगा।"

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"और खुदा तआला के इस वचन का जीवित और व्यावहारिक प्रमाण मैं स्वयं हूँ।"

अर्थात मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम करता हूँ, इसलिए खुदा तआला के अनुग्रह मुझ पर उतर रहे हैं।

फिर फ़रमाते हैं

"मुझे उन निशानों के साथ पहचानो, जिन्हें खुदा तआला ने अपने प्रिय और वली लोगों के लिए क़ुरआन-ए-करीम में निर्धारित किया है।"

अंत में फ़रमाते हैं

"नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नैतिक गुणों की पराकाष्ठा यह थी कि यदि कोई वृद्धा भी आपका हाथ पकड़ लेती, तो आप उसके साथ खड़े हो जाते, उसकी बातें अत्यंत ध्यान से सुनते और जब तक वह स्वयं आपका हाथ न छोड़ती, तब तक आप भी उसे नहीं छोड़ते थे।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 188–189, संस्करण 2022)

एक रिवायत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विनम्रता और सादगी का उल्लेख इस प्रकार मिलता है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमारों की कुशल-क्षेम पूछने जाया करते थे, जनाज़ों में शामिल होते थे, गधे पर भी सवारी कर लेते थे। यदि बहुत साधारण सवारी भी होती, तब भी उसी पर सवार हो जाते थे। किसी ग़ुलाम के निमंत्रण को भी स्वीकार कर लेते थे। बनू क़ुरैज़ा के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक गधे पर सवार थे, जिसकी लगाम खजूर की छाल से बनी रस्सी की थी और उसकी जीन भी खजूर की छाल की बनी हुई थी। अर्थात वह बहुत साधारण थी।

(जामे तिर्मिज़ी, अब्वाबुल जनाइज़, अंतिम बाब, हदीस 1017)

एक रिवायत में आता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक ख़ुत्बे में बयान किया

"खुदा की क़सम! हमें यात्रा में भी और घर पर रहने की अवस्था में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगति प्राप्त रही। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे बीमारों की कुशल-क्षेम पूछते थे, हमारे जनाज़ों में शामिल होते थे। हर स्थान पर और हर कार्य में आप हमारे साथ रहते थे।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, भाग 1, पृष्ठ 226, हदीस 504, आलमुल-कुतुब, 1998)

इसी प्रकार हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया

"यदि मुझे बकरी के एक अगले पैर या पाये के खाने का निमंत्रण दिया जाए, तो मैं अवश्य स्वीकार करूँगा। और यदि बकरी का एक पैर या पाया मुझे उपहार के रूप में भेजा जाए, तो मैं उसे भी अवश्य स्वीकार करूँगा।"

अर्थात यदि बहुत साधारण वस्तु का निमंत्रण हो या छोटा-सा उपहार हो, तब भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसे स्वीकार कर लेते थे।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल हिबा, बाब: छोटे उपहार का स्वीकार करना, अनूदित, भाग 4, पृष्ठ 615, रिवायत 2568, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि एक दिन अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जौ की रोटी और पुरानी चर्बी के भोजन का निमंत्रण दिया गया, और आपने उसे अत्यंत प्रसन्नता के साथ स्वीकार कर लिया।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, भाग 4, पृष्ठ 610–611, रिवायत संख्या 13531, आलमुल-कुतुब, बैरूत, 1998)

एक रिवायत में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सादे भोजन का उल्लेख इस प्रकार मिलता है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि एक दिन एक दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया, जो उसने स्वयं तैयार किया था। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उस दावत में गया। उस दर्ज़ी ने आपके सामने रोटी और शोरबा पेश किया, जिसमें कद्दू के टुकड़े और मांस के टुकड़े थे। मैंने देखा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्याले के किनारों से कद्दू के टुकड़े चुन-चुनकर ले रहे थे और मांस को छोड़ रहे थे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि उसी दिन से मैंने भी कद्दू खाना शुरू कर दिया और मुझे कद्दू पसंद आने लगा।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब: दर्ज़ी, रिवायत 2092, अनूदित, भाग 4, पृष्ठ 58, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

यहाँ मैं अपने मेहमानों के लिए भी एक बात कहना चाहता हूँ। यह उनके लिए भी एक शिक्षा है। विशेषकर जलसा के दिनों में लंगर में कभी-कभी कुछ लोग शिकायत कर देते हैं कि हमें आलू-गोश्त में केवल आलू न डालें, बल्कि केवल मांस ही दें। इसलिए हमें हमेशा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस आदर्श को अपने सामने रखना चाहिए कि भोजन एक निश्चित मात्रा के अनुसार पकाया जाता है। इसलिए जो कुछ मिले, उसी में संतुष्ट होकर खाना चाहिए और जो भी सब्ज़ी या मांस मिले, उसे प्रसन्नता के साथ स्वीकार करके खाना चाहिए।

फिर भावनाओं का ध्यान रखने और विनम्रता का एक और उदाहरण एक रिवायत में इस प्रकार मिलता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक कोढ़ी व्यक्ति का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ एक ही बर्तन में भोजन करने के लिए बैठाया। फिर फ़रमाया

"खुदा का नाम लेकर खाओ, खुदा पर भरोसा रखते हुए और उसी पर पूर्ण विश्वास करते हुए खाओ।"

(जामे तिर्मिज़ी, अब्वाबुल अतइमा, बाब: कोढ़ी के साथ भोजन करने का वर्णन, हदीस 1817)

इसी प्रकार हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक गधे पर सवार हुए, जिस पर फ़दक में बनी हुई एक चादर बिछी हुई थी, और आपने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने पीछे बिठा रखा था। आपके मन में कभी यह विचार नहीं आता था कि मेरे साथ कौन बैठा है और कौन नहीं।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर, बाब: "और तुम अवश्य उन लोगों से बहुत-सी कष्टदायक बातें सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई..." (आल-इमरान: 187), हदीस 4566, अनूदित, भाग 10, पृष्ठ 156)

आपके लिए पूर्ण एवं यथार्थ हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है:

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि क़ुर्बानी के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने पीछे ऊँटनी पर बैठा लिया।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब: खुदा तआला के इस

कथन "ऐ ईमान लाने वालो! अपने घरों के अतिरिक्त दूसरे घरों में प्रवेश न करो..." के संबंध में, हदीस 6228, अनूदित, भाग 14, पृष्ठ 648)

इसी प्रकार हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में प्रवेश कर रहे थे तो लोग आपकी ज़ियारत के लिए आए। विनम्रता के कारण आपका सिर काठी को छू रहा था। एक दूसरी रिवायत के अनुसार, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों के बीच थे। विजय और मुसलमानों की बड़ी संख्या को देखकर भी विनम्रता के कारण आपकी मुबारक दाढ़ी काठी को छू रही थी या छूने के बिल्कुल निकट थी। उस समय आपने दुआ की

"ऐ मेरे अल्लाह! निश्चय ही वास्तविक जीवन तो आखिरत का जीवन है।"

(सुबुलुल हुदा, भाग 5, पृष्ठ 226, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

न्याय, निष्पक्षता, विनम्रता और सादगी का एक पहलू यह भी था कि आपने अपने मुक्त किए हुए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो के पुत्र हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने पीछे सवारी पर बैठाया हुआ था, जबकि क़ुरैश के प्रमुख सरदार और बनू हाशिम के बेटे भी वहाँ उपस्थित थे।

(शरह ज़रक़ानी, भाग 3, पृष्ठ 414, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"जो ऊँचाई ख़ुदा तआला अपने विशेष बंदों को प्रदान करता है, वह विनम्रता के रंग में होती है, जबकि शैतान की ऊँचाई घमंड के साथ मिली हुई थी।"

अर्थात उसमें अहंकार था।

फिर फ़रमाते हैं

"देखो! हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब मक्का को विजय किया तो उसी प्रकार अपना सिर झुकाया और सज्दा किया, जैसे उन कठिन दिनों में किया करते थे जब इसी मक्का में हर प्रकार से आपका विरोध किया जाता था और आपको कष्ट पहुँचाया जाता था। जब आपने देखा कि मैं यहाँ से किस अवस्था में गया था और आज किस अवस्था में लौटा हूँ, तो आपका हृदय ख़ुदा तआला के प्रति कृतज्ञता से भर गया और आपने सज्दा किया।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 3, हाशिया, पृष्ठ 260, संस्करण 2022)

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि ग़ज़वा-ए-बद्र के दिन हममें से प्रत्येक तीन व्यक्तियों के लिए एक ऊँट निर्धारित था। हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पैदल चलने की बारी आई तो दोनों ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आपकी जगह हम पैदल चल लेते हैं, आप सवारी पर ही रहें।"

नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया

"तुम दोनों पैदल चलने में मुझसे अधिक शक्तिशाली नहीं हो और न ही मैं सवाब प्राप्त करने के मामले में तुम दोनों से बेपरवाह हूँ।"

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, भाग 2, पृष्ठ 116–117, मुस्नद अब्दुल्लाह बिन मसऊद, रिवायत 4009, आलमुल-कुतुब, बैरूत, 1998)

एक रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने साथियों के साथ एक यात्रा पर थे। आपने एक बकरी भोजन के लिए तैयार करने का आदेश दिया। एक व्यक्ति ने कहा, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! इसे ज़बह करना मेरे ज़िम्मे है।" दूसरे ने कहा, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! इसकी खाल उतारना मेरे ज़िम्मे है।" तीसरे ने कहा, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! इसे पकाना मेरे ज़िम्मे है।"

इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया

"और ईंधन इकट्ठा करना मेरे ज़िम्मे है।"

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हम आपके लिए पर्याप्त हैं।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया

"मैं जानता हूँ कि तुम पर्याप्त हो, लेकिन मैं यह पसंद नहीं करता कि मैं तुम लोगों में अलग और विशेष दिखाई दूँ, क्योंकि ख़ुदा तआला यह पसंद नहीं करता कि उसका कोई बंदा अपने साथियों के बीच अपने आपको अलग और श्रेष्ठ दिखाए।"

इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वयं उठे और ईंधन इकट्ठा करने लगे।

(तारीख़ुल ख़मीस, भाग 1, पृष्ठ 387–388, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 2009)

ऐसा कोई अवसर नहीं आता था जहाँ आपने अपनी विनम्रता का स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत न किया हो।

एक रिवायत में है कि अस्वद बयान करते हैं कि मैंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने घर में क्या किया करते थे?

उन्होंने फ़रमाया

"आप अपने घरवालों के कामों में हाथ बँटाते थे, अर्थात उनकी सहायता किया करते थे। फिर जब नमाज़ का समय हो जाता तो नमाज़ के लिए चले जाते थे।"

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब: जो व्यक्ति अपने घरवालों के किसी काम में व्यस्त हो..., अनूदित, भाग 2, पृष्ठ 73, हदीस 676, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

अतः यह उन पुरुषों के लिए भी एक शिक्षा है जो घर के किसी भी काम में हाथ बँटाने से पूरी तरह इंकार कर देते हैं, जिससे उनकी पत्नियों को शिकायत का अवसर मिलता है।

इसी प्रकार हिशाम बिन उरवा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा, "क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में कोई काम भी किया करते थे?"

उन्होंने उत्तर दिया

"हाँ, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने जूते की मरम्मत स्वयं कर लेते थे, अपना कपड़ा स्वयं सी लेते थे और अपने घर में उसी प्रकार काम करते थे जैसे तुममें से कोई व्यक्ति अपने घर में काम करता है।"

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, भाग 8, पृष्ठ 313, मुस्नद आयशा, हदीस 25855, आलमुल-कुतुब, 1998)

इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श को देखकर अपने घर के कामों में अपनी पत्नियों की सहायता किया करते थे।

लेकिन यह बात भी स्पष्ट रहनी चाहिए कि घर के कामों की मूल ज़िम्मेदारी पत्नी की होती है। इसे सुनकर यह न समझ लिया जाए कि अब वे अपने कर्तव्य से मुक्त हो गई हैं। साथ ही पुरुषों का भी यह कर्तव्य है कि वे घर के कामों में अपनी पत्नियों का हाथ बँटाएँ।

आपके दिए गए उर्दू पाठ का संपूर्ण, बिना किसी कमी-बेशी के, सरल, समाचार-पत्र जैसी भाषा में हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है:

इसी प्रकार एक और रिवायत में आता है। क़ासिम से रिवायत है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर में क्या काम किया करते थे? उन्होंने बताया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी अन्य मनुष्यों की तरह एक मनुष्य थे। अपने कपड़े स्वयं झाड़ते थे, अपनी बकरी स्वयं दुहते थे और अपना काम स्वयं किया करते थे।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, भाग 8, पृष्ठ 507, मुस्नद आयशा, रिवायत 26724, आलमुल-कुतुब, बैरूत, 1998)

एक रिवायत हज़रत अबू बुर्दा रज़ियल्लाहु अन्हो से है। पहले भी इससे मिलती-जुलती रिवायतें बयान हो चुकी हैं। इसमें इसके अतिरिक्त यह उल्लेख मिलता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऊन के कपड़े पहनते थे, अपने पशुओं को स्वयं बाँध लेते थे और मेहमान की ख़बर लेने के लिए स्वयं उसके पास जाते थे।

(दलाइलुन नुबुव्वत लिल बैहक़ी, भाग 1, पृष्ठ 329, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 1988)

अर्थात मेहमाननवाज़ी भी स्वयं करते थे और हर प्रकार का वस्त्र, चाहे वह मोटा और खुरदरा ही क्यों न हो, पहन लेते थे। आपका पहनावा अत्यंत सादा था।

हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने कहा कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ मस्जिद की ओर निकला। रास्ते में आपके जूते का तस्मा टूट गया। मैं आपका जूता लेकर उसे ठीक करने लगा। आपने मेरे हाथ से जूता वापस ले लिया और फ़रमाया

"यह विशेष व्यवहार है और मुझे विशेष व्यवहार पसंद नहीं है।"

(मजमउज़्-ज़वाइद व मनबउल फ़वाइद, लिल हैसमी, भाग 8, पृष्ठ 422, किताब: अलामाते नुबुव्वत, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विनम्रता, रिवायत 14232, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2001)

हसनह बिन ख़ालिद और सुवा बिन ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी दीवार या अपने किसी मकान की मरम्मत

में व्यस्त थे।

(सुबुलुल हुदा वर-रशाद, भाग 7, पृष्ठ 36, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

अर्थात आप अपने हाथों से अपने घर का काम कर रहे थे।

इसी प्रकार सहीह अल-बुख़ारी में मस्जिद-ए-नबवी के निर्माण का विवरण मिलता है। जब आपकी ऊँटनी उस स्थान पर जाकर बैठ गई जहाँ दो लड़कों की ज़मीन थी, तो आपने फ़रमाया कि यह स्थान हमारे लिए उपयुक्त है। उन दोनों लड़कों ने मूल्य लेने से इंकार किया, फिर भी आपने उस भूमि का मूल्य अदा किया। इसके बाद जब मस्जिद के निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वयं लोगों के साथ मिलकर ईंटें उठाने लगे।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके साथियों की मदीना की ओर हिजरत, अनूदित, भाग 7, पृष्ठ 401, रिवायत 3906, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

अर्थात मस्जिद के निर्माण के कार्य में भी आपने स्वयं भाग लिया।

इसी प्रकार हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है। वे कहते हैं कि मैंने ख़ंदक के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिट्टी उठाते हुए देखा। स्थिति यह थी कि मिट्टी के कारण आपके सीने के बाल दिखाई नहीं दे रहे थे।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल जिहाद वस-सियर, बाब: युद्ध में रजज़ पढ़ना, अनूदित, भाग 5, पृष्ठ 378–379, रिवायत 3034, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि एक सुबह मैं अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा को लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में गया ताकि आप उसे घुट्टी दें। अर्थात बच्चे के जन्म के बाद प्रारम्भ में शहद चटाने के लिए ले जाया गया था। उस समय मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम काम कर रहे थे। आपके हाथ में वह औज़ार था जिससे जानवरों पर निशान लगाया जाता है, और आप सदक़े के ऊँटों पर निशान लगा रहे थे।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुज़-ज़कात, बाब: इमाम का सदक़े के ऊँटों पर निशान लगाना..., अनूदित, भाग 3, पृष्ठ 154, रिवायत 1502, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

अर्थात जहाँ भी अवसर मिलता, आप स्वयं काम कर लेते थे, बजाय इसके कि अपने सहायकों को बुलाएँ।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अबू उमामा अल-बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए। आपके हाथ में एक लाठी थी। जब हमने आपको देखा तो हम सम्मान में खड़े हो गए। इस पर आपने फ़रमाया

"ऐसा मत करो, जैसा फ़ारस वाले अपने बड़ों के लिए खड़े होते हैं।"

हमने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हमारे लिए ख़ुदा तआला से दुआ कीजिए।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ की

"ऐ अल्लाह! हमें क्षमा कर दे, हम पर दया कर, हमसे प्रसन्न हो जा, हमारे कर्म स्वीकार कर, हमें जन्नत में प्रवेश दे, हमें आग से बचा और हमारे सभी काम ठीक कर दे।"

रिवायत करने वाले ने कहा कि हमें इच्छा हुई कि आप हमारे लिए और अधिक दुआ करें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

"क्या मैंने तुम्हारे लिए सब बातें एक ही दुआ में एकत्र नहीं कर दीं?"

अर्थात यह बहुत व्यापक दुआ है। इसे पढ़ा किया करो।

(सुनन इब्न माजा, किताबुद-दुआ, बाब: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएँ, रिवायत 3836)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विनम्रता का यह हाल था कि जब आप आते तो लोगों को अपने सम्मान में खड़े होने से मना कर देते थे और फ़रमाते थे कि यह तो ईरानियों की प्रथा है। मैं कोई बादशाह नहीं हूँ, बल्कि ख़ुदा तआला ने मुझे नबी बनाया है।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, भाग 15, पृष्ठ 157, संस्करण 2023)

अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विनम्रता के ऐसे उच्च आदर्श थे, जिनकी मिसाल कहीं और नहीं मिलती। यही वह आदर्श है, जिस पर चलने का हमें प्रयास करना चाहिए, ताकि हम भी ख़ुदा तआला का निकटता प्राप्त करने वाले बन सकें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श के प्रकाश में हमें नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं

"मेरे विचार में पवित्र बनने का सबसे उत्तम उपाय यही है और इससे अच्छा कोई दूसरा उपाय संभव नहीं कि मनुष्य किसी प्रकार का घमंड और अभिमान न करे न ज्ञान का, न खानदान का और न धन का। जब ख़ुदा तआला किसी को सही दृष्टि प्रदान करता है तो वह समझ जाता है कि हर वह प्रकाश, जो इन अंधेरों से मुक्ति दिला सकता है, केवल आकाश से आता है और मनुष्य हर समय उसी आकाशीय प्रकाश का मोहताज है। आँख भी तब तक नहीं देख सकती जब तक सूर्य का प्रकाश, जो आकाश से आता है, उसे प्राप्त न हो। इसी प्रकार वह आंतरिक प्रकाश, जो हर प्रकार के अंधकार को दूर करके उसकी जगह तक़्वा और पवित्रता का नूर पैदा करता है, वह भी आकाश ही से आता है।"

"मैं सच्चाई से कहता हूँ कि मनुष्य का तक़्वा, ईमान, इबादत और पवित्रता सब कुछ आकाश से आता है और यह सब ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल पर निर्भर है। यदि वह चाहे तो इन्हें बनाए रखे और यदि चाहे तो छीन ले।"

"अतः सच्ची पहचान इसी का नाम है कि मनुष्य अपने आपको बिल्कुल असहाय और कुछ भी न समझे, ख़ुदा तआला की चौखट पर गिरकर अत्यंत विनम्रता और दीनता के साथ उसके फ़ज़्ल की याचना करे और उस पहचान के नूर को माँगे, जो मन की बुरी इच्छाओं को जला देता है तथा भीतर एक नया प्रकाश, नेकी करने की शक्ति और उत्साह उत्पन्न करता है।"

"फिर यदि उसके फ़ज़्ल से उसे इसका कुछ भाग मिल जाए और कभी उसके हृदय में विस्तार और आनंद की अवस्था उत्पन्न हो जाए, तो उस पर घमंड और अभिमान न करे, बल्कि उसकी विनम्रता और भी बढ़ जानी चाहिए। क्योंकि जितना अधिक वह अपने आपको कुछ भी न समझेगा, उतने ही अधिक ख़ुदा तआला के नूर और आध्यात्मिक प्रभाव उस पर उतरेंगे, जो उसे प्रकाश और शक्ति प्रदान करेंगे। यदि मनुष्य यह विश्वास रखेगा, तो आशा है कि ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से उसका नैतिक स्तर उत्तम हो जाएगा। संसार में अपने आपको कुछ समझना भी घमंड है और यही घमंड आगे चलकर मनुष्य को दूसरों पर लानत करने और उन्हें तुच्छ समझने वाला बना देता है।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 7, पृष्ठ 59–60, संस्करण 2022)

फिर आपने फ़रमाया "मनुष्य, जो स्वयं एक अत्यंत दीन प्राणी है, अपने ही कर्मों के कारण अपने आपको बड़ा समझने लगता है। उसमें घमंड और अहंकार आ जाता है। जब तक मनुष्य ख़ुदा की राह में अपने आपको सबसे छोटा नहीं समझेगा, तब तक वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।"

कबीर (भक्त कबीर), जो भारत के एक सूफ़ी कवि थे, उन्होंने ठीक ही कहा है

भला हुआ हम नीच भये, सबको किया सलाम।
जे होते घर ऊँच के, मिलता कहाँ भगवान॥

अर्थात ख़ुदा तआला का धन्यवाद है कि हमारा जन्म एक साधारण परिवार में हुआ। यदि किसी ऊँचे खानदान में जन्म होता, तो शायद ख़ुदा तआला न मिलता। जब लोग अपनी ऊँची जाति और वंश पर गर्व करते थे, तब कबीर अपने जुलाहा (बुनकर) होने पर ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करते थे।

अतः मनुष्य को हर समय अपने भीतर झाँकना चाहिए और सोचना चाहिए कि मैं कितना तुच्छ हूँ, मेरी क्या हैसियत है। चाहे कोई कितना ही ऊँचे वंश का क्यों न हो, यदि वह सच्ची दृष्टि रखता है तो वह अवश्य समझ जाएगा कि समस्त सृष्टि के सामने उसकी अपनी कोई वास्तविक हैसियत नहीं है।

"जब तक मनुष्य किसी गरीब और असहाय वृद्धा के साथ भी वही व्यवहार नहीं करता, जो किसी उच्च कुल और प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ करता है या करना चाहिए, और जब तक वह हर प्रकार के घमंड, अहंकार और अभिमान से अपने आपको नहीं बचाता, तब तक वह किसी भी स्थिति में ख़ुदा तआला के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 5, पृष्ठ 138, संस्करण 2022)

यदि ख़ुदा तआला को पाना है, तो विनम्रता एक अनिवार्य शर्त है।

अल्लाह तआला हमें विनम्रता की वास्तविकता को समझने और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श को सदैव अपने सामने रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

विजय : पराजय के आवरण में

मुसलमानों ने उन का पीछा करना आरम्भ किया। यह देख कर दर्रे की सुरक्षा पर नियुक्त सैनिकों ने अपने अफ़सर से कहा कि अब तो शत्रु पराजित हो चुका है, अब हमें भी जिहाद का पुण्य प्राप्त करने दिया जाए। अफ़सर ने उन्हें इस बात से रोका तथा रसूले करीम (स.अ.व.) का आदेश स्मरण कराया परन्तु उन्होंने कहा रसूले करीम (स.अ.व.) ने जो कुछ फ़रमाया था केवल ज़ोर देने के लिए फ़रमाया था अन्यथा आप का अभिप्राय यह तो नहीं हो सकता था कि शत्रु भाग भी जाए तो भी यहां खड़े रहो। यह कहते हुए उन्होंने दर्रा छोड़ दिया और रणभूमि में कूद पड़े। भागती हुई सेना में से ख़ालिद बिन वलीद जो बाद में इस्लाम के महान सेनापति सिद्ध हुए की दृष्टि ख़ाली दर्रे पर पड़ी जहां केवल कुछ सैनिक अपने अफ़सर के साथ खड़े थे। ख़ालिद ने अपनी (काफ़िरों की) सेना के अन्य सेनापति उमर बिन अलआस को आवाज़ दी और कहा कि पीछे पहाड़ी दर्रे पर तनिक दृष्टि डालो। उमर बिन अलआस ने जब दर्रे पर दृष्टि डाली तो समझा कि मुझे जीवन का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है। दोनों सेनापतियों ने अपनी भागती हुई सेना को संभाला और इस्लामी सेना को भारी क्षति पहुँचाते हुए पर्वत पर चढ़ गए, वहां दर्रे की सुरक्षा के लिए थोड़े से मुसलमान खड़े रह गए थे, उनको टुकड़े-टुकड़े करते हुए पीछे से इस्लामी सेना पर टूट पड़े। उनके विजय-नाद को सुनकर शत्रु की भागती सेना रणभूमि की ओर लौट पड़ी। यह आक्रमण ऐसा अचानक हुआ तथा काफ़िरों का पीछा करने के कारण मुसलमान इतने बिखर गए कि उन लोगों के मुक़ाबले में कोई समुचित इस्लामी सेना नहीं थी। रणभूमि में अकेला-अकेला सैनिक दिखाई दे रहा था, जिन में से कुछ को उन लोगों ने मार दिया, शेष इस असमंजस में थे कि यह हो क्या गया है पीछे की ओर दौड़े। कुछ सहाबा दौड़ कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर एकत्र हो गए जिनकी संख्या अधिक से अधिक तीस थी[1]। काफ़िरों ने उस स्थान पर भयंकर आक्रमण किया जहां रसूले करीम (स.अ.व.) खड़े थे। सहाबा एक के बाद एक आप[स.] की रक्षा करते हुए मारे जाने लगे। कृपाणधारियों के अतिरिक्त धनुषधारी ऊँचे टीलों पर खड़े होकर रसूले करीम (स.अ.व.) की ओर अंधाधुंध वाण-वर्षा कर रहे थे। उस समय तल्हा[रज़ि.] ने जो क़ुरैश में से थे तथा मक्का के मुहाजिरों में से थे, यह देखते हुए कि शत्रु सब के सब तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की ओर फेंक रहा है अपना हाथ रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के मुख के आगे खड़ा कर दिया। वाण-वर्षा में जो तीर लक्ष्य पर गिरता था वह 'तल्हा[रज़ि.]' के हाथ पर गिरता था, परन्तु प्राणों की बाज़ी लगाने वाला वफ़ादार सिपाही अपने हाथ को कोई हरकत नहीं देता था। इस प्रकार तीर पड़ते गए और तल्हा[रज़ि.] का हाथ घावों से छलनी हो कर बिल्कुल बेकार हो गया और उनका एक ही हाथ शेष रह गया। वर्षों पश्चात् इस्लाम की चौथी ख़िलाफ़त के युग में जब मुसलमानों में गृह-युद्ध आरम्भ हुआ तो किसी शत्रु ने व्यंग के तौर पर तल्हा को टुण्डा कहा। इस पर एक अन्य सहाबी ने कहा हाँ टुण्डा ही है परन्तु कैसा मुबारक टुण्डा है। तुम्हें ज्ञात है तल्हा का यह हाथ रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की रक्षा में टुण्डा हुआ था। उहद के युद्धोपरान्त किसी व्यक्ति ने तल्हा[रज़ि.] से पूछा कि जब वाण हाथ पर लगते थे तो क्या आप को दर्द नहीं होता था और क्या आप के मुख से उफ़ नहीं निकलती थी? तल्हा[रज़ि.] ने उत्तर दिया दर्द भी होता था और उफ़ भी निकलना चाहती थी परन्तु मैं उफ़ करता नहीं था ताकि ऐसा न हो कि उफ़ करते समय मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख पर आ लगे।

परन्तु ये कुछ लोग इतनी विशाल सेना का कब तक मुक़ाबला कर सकते थे क़ाफ़िरों की सेना का एक गिरोह आगे बढ़ा और उस ने रसूले करीम (स.अ.व.) के पास के जवानों को धकेला कर पीछे कर दिया। रसूले करीम (स.अ.व.) वहां अकेले पर्वत की भांति खड़े थे कि बड़े ज़ोर से एक पत्थर आप के ख़ोद (Security Cap लोहे की टोपी) पर लगा ख़ोद की कील आप के सर पर घुस गई और आप बेहोश होकर उन सहाबा[रज़ि.] के शवों पर जा पड़े जो आप के चारों ओर लड़ते हुए शहीद हो चुके थे[1]। तत्पश्चात् कुछ अन्य सहाबा[रज़ि.] आप के शरीर की रक्षा करते हुए शहीद हुए और उनके शव आप के शरीर पर जा गिरे। काफ़िरों ने आप के शरीर को शवों के नीचे दबा हुआ देख कर समझा कि आप मारे जा चुके हैं। अतः मक्का की सेना स्वयं को पुनर्गठन के उद्देश्य से पीछे हट गई। जो सहाबा आप के पास खड़े थे और जिन्हें काफ़िरों की सेना का रेला ढकेल कर पीछे ले गया था उनमें हज़रत उमर[रज़ि.] भी थे। जब आप ने देखा कि रणभूमि समस्त लड़ने वालों से साफ हो चुकी है तो आप को विश्वास हो गया कि रसूले करीम (स.अ.व.) शहीद हो गए हैं और वह व्यक्ति जिस ने बाद में एक ही समय में क़ैसर तथा किस्रा का मुकाबला बड़ी बहादुरी से किया था और उस का हृदय कभी नहीं घबराया और न भयभीत हुआ था। वह एक पत्थर पर बैठकर बच्चों की भांति रोने लग गया, इतने में मालिक[रज़ि.] नामक एक सहाबी जो इस्लामी सेना की विजय के समय पीछे हट गए थे; क्योंकि वह निराहार थे और रात से उन्होंने कुछ नहीं खाया था। जब विजय हो गई तो कुछ खजूरें लेकर पीछे की ओर चले गए ताकि उन्हें खाकर अपनी भूख दूर करें। वह विजय की ख़ुशी में टहल रहे थे कि टहलते-टहलते हज़रत उमर[रज़ि.] तक जा पहुँचे और उमर[रज़ि.] को रोते देख कर हैरान हुए और आश्चर्य से पूछा उमर आप को क्या हुआ? इस्लाम की विजय पर आप को प्रसन्न होना चाहिए या रोना चाहिए? उमर ने उत्तर में कहा मालिक! कदाचित तुम विजय के तुरन्त बाद पीछे हट आए थे, तुम्हें मालूम नहीं कि काफ़िरों की सेना पहाड़ी के पीछे से चक्कर काटकर इस्लामी सेना पर टूट पड़ी और चूंकि मुसलमान अस्त-व्यस्त हो चुके थे, उनका मुकाबला कोई न कर सका। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) कुछ सहाबा के साथ उन के मुक़ाबले के लिए खड़े हुए और मुक़ाबला करते-करते शहीद हो गए। मालिक[रज़ि.] ने कहा उमर यदि यह बात सही है तो आप यहां बैठे क्यों रो रहे हैं, जिस लोक में हमारा प्यारा गया है हमें भी तो वहीं जाना चाहिए। यह कहा और वह अन्तिम खजूर जो आप के हाथ में थी जिसे आप मुख में डालने ही वाले थे उसे यह कहते हुए फेंक दिया कि हे खजूर! मालिक और स्वर्ग के मध्य तेरे अतिरिक्त और कौन सी वस्तु रोक है यह कहा और तलवार लेकर शत्रु की सेना में घुस गए। तीन हज़ार सेना के मुकाबले में एक व्यक्ति कर ही क्या सकता था, परन्तु एक ख़ुदा की उपासना करने वाली भावना बहुतों पर भारी होती है। मालिक[रज़ि.] इस निर्भयता से लड़े कि शत्रु स्तब्ध रह गया परन्तु अन्ततः घायल हुए, फिर गिरे तथा गिर कर भी शत्रुओं के सैनिकों पर आक्रमण करते रहे, जिस के परिणामस्वरूप मक्का के काफ़िरों ने आप पर इतना भयानक आक्रमण किया कि युद्ध के पश्चात् आप के शव के सत्तर टुकड़े मिले, यहां तक कि आप का शव पहचाना नहीं जाता था। अन्त में आप की बहन ने एक उंगली से पहचान कर बताया कि यह मेरे भाई का शव है।

वे सहाबा[रज़ि.] जो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर थे और जो काफ़िरों की सेना की बहुतात के कारण पीछे ढकेल दिए गए थे, काफ़िरों के पीछे हटते ही वे पुनः रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास एकत्र हो गए। उन्होंने आपके मुबारक शरीर को उठाया तथा एक

सहाबी उबैदा बिन जर्राह ने अपने दांतों से आप के सर में घुसी हुई कील को ज़ोर से निकाला जिस से उनके दो दांत टूट गए। थोड़ी देर में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को होश आ गया और सहाबा ने मैदान में चारों ओर लोग दौड़ा दिए कि मुसलमान पुनः एकत्र हो जाएं। भागी हुई सेना पुनः एकत्र होने लगी। रसूले करीम (स.अ.व.) उन्हें लेकर पर्वत के आंचल में चले गए। जब पर्वत के आंचल में बची हुई सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हम ने मुहम्मद (स.अ.व.) को मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू सुफ़यान की बात का उत्तर न दिया ताकि ऐसा न हो कि शत्रु वस्तु स्थिति से अवगत हो कर पुनः आक्रमण कर दे और घायल मुसलमान पुनः शत्रु के आक्रमण के शिकार हो जाएँ। जब इस्लामी सेना से इस बात का कोई उत्तर न मिला तो अबू सुफ़यान को विश्वास हो गया कि उस का अनुमान उचित है तब उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा हम ने अबू बक्र[रज़ि.] को भी मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू बकर[रज़ि.] को आदेश दिया कि कोई उत्तर न दें। अबू सुफ़यान ने फिर आवाज़ दी हमने उमर[रज़ि.] को भी मार दिया। तब उमर[रज़ि.] जो बहुत जोशीले व्यक्ति थे, उन्होंने उसके प्रत्युत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा की कृपा से जीवित हैं और तुम्हारा मुकाबला करने के लिए तैयार हैं परन्तु रसूले करीम (स.अ.व.) ने रोक दिया कि मुसलमानों को कष्ट में न डालो, ख़ामोश रहो। अतः काफ़िरों को विश्वास हो गया कि इस्लाम के प्रवर्तक तथा उनके दाएं-बाएं की सेना को भी हमने मौत के घाट उतार दिया है। इस पर अबू सुफ़यान और उसके साथियों ने ख़ुशी से जयघोष किया أَعْلُ هُبَلْ أَعْلُ هُبَلْ 'हमारी सम्माननीय मूर्ति हुबुल की जय हो' कि उसने आज इस्लाम का अन्त कर दिया है। वही रसूले करीम (स.अ.व.) जो अपनी मृत्यु की घोषणा पर, अबूबकर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर तथा उमर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर ख़ामोश रहने का उपदेश दे रहे थे ताकि ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर काफ़िरों की सेना फिर से आक्रमण न कर दे और मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएं। अब जब कि एक ख़ुदा की प्रतिष्ठा का प्रश्न उत्पन्न हुआ और मैदान में द्वैतवाद का जयघोष किया गया तो आपकी आत्मा व्याकुल हो उठी तथा आपने अत्यन्त जोश के साथ सहाबा की ओर देखते हुए फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते। सहाबा ने कहा हे अल्लाह के रसूल! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰہُ اَعْلٰی وَاَجَلُّ[1] (अल्लाहो आ'ला व अजल्ल) तुम झूठ बोलते हो कि हुबुल की शान ऊँची हुई। ख़ुदा एक है उसका कोई साथी नहीं, वह प्रतिष्ठावान है तथा बड़ी शान वाला है। और इस प्रकार आपने अपने जीवित होने की सूचना शत्रुओं को पहुँचा दी। इस वीरता और निर्भीकतापूर्ण उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि इसके बावजूद कि उनकी आशाएं इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं तथा इसके बावजूद कि उन के सामने मुट्ठी भर मुसलमान खड़े थे जिन पर आक्रमण करके उन्हें मार देना सांसारिक दृष्टि से बिल्कुल संभव था वे दोबारा आक्रमण करने का साहस न कर सके और उन्हें जिस सीमा तक विजय प्राप्त हुई थी उसी की खुशियां मनाते हुए मक्का को प्रस्थान किया। उहद के युद्ध में स्पष्ट विजय के पश्चात् एक पराजय का रूप देखने को मिला परन्तु यह युद्ध वास्तव में मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सच्चाई का एक महान चमत्कार पूर्ण प्रमाण था। इस युद्ध में रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों को पहले सफलता प्राप्त हुई फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार आप के प्रिय चाचा हम्ज़ा[रज़ि.] युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार स्वयं आप[स.] भी घायल हुए और बहुत से सहाबा शहीद हुए। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को ऐसी आत्मीय शुद्धि और ईमान के प्रदर्शन का अवसर प्राप्त हुआ, जिस का उदाहरण इतिहास में और कहीं नहीं मिलता। इस वफ़ादारी और ईमान के प्रदर्शन की कुछ घटनाएं तो पहले वर्णन हो चुकी हैं एक अन्य घटना भी उल्लेखनीय है जिस से ज्ञात होता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की संगति ने सहाबा[रज़ि.] के हृदयों में कितना दृढ़ ईमान पैदा कर दिया था। जब रसूले करीम (स.अ.व.) कुछ सहाबा को साथ लेकर पर्वत के आंचल की ओर चले गए और शत्रु पीछे हट गया तो आप ने कुछ सहाबा[रज़ि.] को आदेश दिया कि वे मैदान में जाएं और घायलों को देखें। एक सहाबी मैदान में खोज करते-करते एक घायल अन्सारी के पास पहुँचे। देखा तो उन की दशा बड़ी दयनीय थी और वह प्राण त्याग रहे थे। यह सहाबी उन के पास पहुँचे और उन्हें अस्सलामो अलैकुम कहा। उन्होंने कांपता हुआ हाथ मिलाने के लिए उठाया और उन का हाथ पकड़ कर कहा मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कोई भाई मुझे मिल जाए। उन्होंने उस सहाबी से पूछा कि आपकी दशा तो ख़तरनाक विदित होती है। क्या कोई सन्देश है जो आप अपने परिजनों को देना चाहते हैं? उस मरणासन्न सहाबी ने कहा हाँ ! मेरी ओर से मेरे परिजनों को सलाम कहना कि मैं तो मर रहा हूँ परन्तु अपने पीछे ख़ुदा तआला की एक पवित्र अमानत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का अस्तित्व तुम में छोड़े जा रहा हूँ। हे मेरे भाइयो और सम्बन्धियो ! वह ख़ुदा का सच्चा रसूल है। शेष

पृष्ठ 1 का शेष

अंधा बना दिया था। जबकि हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो पवित्र और पूर्णतः निर्मल थे, और निःसंदेह वे उन चुने हुए लोगों में से हैं जिन्हें ख़ुदा तआला अपने हाथ से पवित्र करता है और अपनी मुहब्बत से भर देता है। निःसंदेह वह जन्नत के सरदारों में से हैं। उनके प्रति रत्तीभर भी द्वेष रखना ईमान के नष्ट हो जाने का कारण है। इस इमाम का तक़्वा, ख़ुदा से प्रेम, धैर्य, दृढ़ता, वैराग्य और इबादत हमारे लिए एक उत्तम आदर्श है।"

(मजमूआ इश्तिहारात, जिल्द 3, पृष्ठ 548 से 550, इश्तिहार संख्या 263, प्रकाशित: अश-शिर्कतुल इस्लामिया, रब्वा)

आप अलैहिस्सलाम अपने एक फ़ारसी शेर में फ़रमाते हैं:

جان و دلم فدائے جمال محمدؐ است
خاکم نثار کوچۂ آلِ محمدؐ است

अनुवाद: मेरा प्राण और मेरा हृदय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सौंदर्य पर समर्पित है, और मेरी मिट्टी भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के परिवार की गली पर न्यौछावर है।

(दुर्र-ए-समीन फ़ारसी, पृष्ठ 89)

पृष्ठ 1 का शेष

और उसका बाप हज़रत हसन तथा हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पिता से निम्न दर्जे का था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो अपने समय में ख़िलाफ़त के अधिक अधिकारी थे, और उनके बाद मेरे दादा और पिता की अपेक्षा हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ख़िलाफ़त के अधिक अधिकारी थे। इसलिए मैं इस शासन-पद से त्यागपत्र देता हूँ।"

(ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, अनवारुल उलूम, जिल्द 15, पृष्ठ 557–588)

एक बार एक शिया मित्र हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने आए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे संबोधित होकर फ़रमाया:

"आप शिया मत से सम्बन्ध रखते हैं। आप देखिए कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ जो कुछ हुआ, उसका बदला ख़ुदा तआला ने किस प्रकार लिया। यज़ीद की मृत्यु के बाद उसके बेटे को बादशाह बनाया गया। उसने सबसे पहला काम यह किया कि लोगों को एकत्र किया और कहा ऐ लोगो ! तुमने मुझे बादशाह तो बना दिया है, लेकिन मैं इसका अधिकारी नहीं हूँ। यहाँ ऐसे लोग मौजूद हैं जो मुझसे अधिक अधिकारी हैं। तुम उन्हें बादशाह बना लो। और यदि उन्हें बादशाह नहीं बनाते, तो यह ख़िलाफ़त सामने रखी है।

लोगों ने उसे बहुत विवश किया, लेकिन यज़ीद के बेटे ने, जो एक अत्यन्त नेक इंसान था, कहा कि मैं इसका अधिकारी नहीं हूँ। जब वह घर लौटा तो घरवालों ने कहा कि तुमने तो पूरे ख़ानदान की नाक कटवा दी। उसने उत्तर दिया कि मैंने नाक नहीं कटवाई, बल्कि नाक ऊँची कर दी है। इस प्रकार ख़ुदा तआला ने इमाम हुसैन का बदला ले लिया।"

(रोज़नामा अल-फ़ज़्ल, रब्वा, दिनांक 5 जुलाई 1960, पृष्ठ 3)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 02 July 2026 Issue No. 27

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम

{70} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब ने हमसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का समय बड़ा ही निराला था। क़ादियान में लगातार दो दिन भी तेज़ गर्मी नहीं पड़ती थी कि तीसरे दिन वर्षा हो जाती थी। जब गर्मी पड़ती और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहते कि हुज़ूर, आज बहुत गर्मी है, तो अगले ही दिन वर्षा हो जाती थी। इसी प्रकार मौलवी सैयद सरवर शाह साहिब ने भी बयान किया कि उस समय खेती-बाड़ी के बारे में भी कभी शिकायत नहीं हुई।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि जब मैंने घर जाकर अपनी माता जी से इसका उल्लेख किया तो उन्होंने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब फ़रमाते थे कि आज बहुत गर्मी है, तो प्रायः उसी दिन या अगले दिन वर्षा हो जाती थी। और आपके बाद तो कई-कई महीने तक मानो आग बरसती रहती है और वर्षा नहीं होती।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय क़ादियान में कभी वर्षा के लिए विशेष नमाज़ (नमाज़-ए-इस्तिस्का) नहीं पढ़ी गई, जबकि आपके बाद कई बार यह नमाज़ पढ़ी गई।

(इस रिवायत के संबंध में यह बात ध्यान देने योग्य है कि मेरा यह विचार कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय कभी नमाज़-ए-इस्तिस्का नहीं पढ़ी गई, सही नहीं निकला। देखिए भाग द्वितीय, रिवायत संख्या 415। लेकिन यह विचार कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय क़ादियान में सामान्य रूप से लगातार बहुत दिनों तक अत्यधिक गर्मी नहीं पड़ती थी, हर हाल में सही है।)

{71} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। ख़ाकसार निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह एक सामान्य आदत थी कि आप प्रातःकाल बाहर सैर के लिए जाया करते थे। आपके ख़िदमतगार भी आपके साथ होते थे और आप एक-एक, दो-दो मील तक पैदल चलते थे। आपकी आदत थी कि आप बहुत तेज़ चलते थे, लेकिन इसके बावजूद आपकी चाल में पूरा-पूरा गरिमापूर्ण संतुलन रहता था।हुज़ूर जब सैर के लिए जाते थे तो हज़रत मौलवी साहिब (ख़लीफ़ा प्रथम) को भी साथ चलने के लिए बुला लिया करते थे। लेकिन चूँकि मौलवी साहिब बहुत धीरे-धीरे और ठहर-ठहरकर चलते थे, इसलिए थोड़ी दूर चलने के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से पीछे रह जाते थे। जब हुज़ूर को इसका पता चलता तो आप उनके इंतज़ार में कुछ देर सड़क पर ठहर जाते थे। लेकिन मौलवी साहिब फिर कुछ दूर चलकर पीछे रह जाते थे और दो-चार व्यक्ति उनके साथ हो जाते थे।

मैंने यह भी देखा है कि नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब को भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने साथ सैर पर ले जाया करते थे। कई बार ऐसा होता कि आप अपने घर से निकलकर चौक में अपने ख़िदमतगारों के साथ नवाब साहिब की प्रतीक्षा करते रहते थे। कभी-कभी नवाब साहिब को आने में देर हो जाती तो आप कई-कई मिनट तक उनके दरवाज़े के सामने चौक में खड़े रहते थे, फिर उन्हें साथ लेकर सैर के लिए जाते थे।

सैर के समय हुज़ूर की अपने ख़िदमतगारों के साथ बातचीत होती रहती थी। हुज़ूर बोलते जाते थे और अख़बार लिखने वाले लोग अपनी ओर से बातें नोट करते जाते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम प्रायः सैर के लिए बसरावाँ वाले रास्ते या बूटर वाले रास्ते पर जाया करते थे। कभी-कभी अपने बाग़ की ओर भी चले जाते थे और शहतूत तथा बेज़ाना आदि तुड़वाकर ख़िदमतगारों के सामने रखवा देते थे तथा स्वयं भी खाते थे।

सैर के दौरान यदि किसी व्यक्ति का पैर असावधानी से हुज़ूर की लाठी पर पड़ जाता और वह आपके हाथ से गिर जाती, तो हुज़ूर कभी मुड़कर यह नहीं देखते थे कि वह किसके कारण गिरी है।

कभी-कभी जलसों आदि के अवसर पर सैर में बहुत अधिक लोग हुज़ूर के साथ हो जाते थे। उस समय कुछ ख़िदमतगार स्वयं ही एक-दूसरे का हाथ पकड़कर हुज़ूर के तीनों ओर एक घेरा बना लेते थे ताकि हुज़ूर को किसी प्रकार की तकलीफ़ न हो।

लेकिन अंतिम जलसे में, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवनकाल में हुआ, जब हुज़ूर बूटर (उत्तर) की ओर सैर के लिए निकले तो इतनी बड़ी संख्या में लोग आपके साथ हो गए कि चलना कठिन हो गया। इसलिए हुज़ूर कुछ दूर जाकर वापस लौट आए।

ख़ाकसार को याद है कि एक बार हुज़ूर बसरावाँ (पूर्व) वाले रास्ते पर सैर करके वापस आ रहे थे कि रास्ते में क़ादियान से जाते हुए मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन मिले, जो हुज़ूर के चचेरे भाई थे, लेकिन बहुत बड़े विरोधी थे। उस समय वे घोड़े पर सवार थे। जैसे ही उन्होंने हुज़ूर को आते देखा, वे घोड़े से उतर आए और रास्ते से हटकर एक ओर खड़े हो गए। जब हुज़ूर उनके पास से गुज़रे तो उन्होंने आदरपूर्वक झुककर सलाम किया।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि जब कोई व्यक्ति हाथ उठाकर पास से गुज़रते हुए हुज़ूर को सलाम करता था, तो हुज़ूर भी उसके उत्तर में अपना हाथ उठाया करते थे।

आपके दिए गए उर्दू पाठ का पूर्ण, यथावत् और सरल हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है:

{72} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कद मध्यम था। आपका रंग गेहुँआ था। चेहरा भरा हुआ था। बाल सीधे और मुलायम थे। हाथ और पैर भी भरे-भरे थे। जीवन के अंतिम समय में शरीर कुछ भारी हो गया था।

आपके व्यक्तित्व, चाल-ढाल और चेहरे-मोहरे में ख़ुदा तआला की ओर से दिया हुआ एक विशेष रौब था। लेकिन जो भी आपसे मिलता था, उसका दिल आपके प्रति प्रेम से भर जाता था और एक छिपी हुई शक्ति लोगों को आपकी ओर खींच लेती थी।

सैकड़ों लोग विरोध की भावना लेकर आए, लेकिन आपका चेहरा देखते ही शांत हो गए और उन्होंने कोई तर्क या दलील भी नहीं पूछी।

रौब का यह हाल था कि कई कठोर स्वभाव वाले लोग बुरे इरादे लेकर आपके सामने आते थे, लेकिन आपके सामने पहुँचकर उनमें एक शब्द तक बोलने की शक्ति नहीं रहती थी।

{73} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मौलवी सैयद मुहम्मद सरवर शाह साहिब ने मुझसे बयान किया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में मर्दान का एक व्यक्ति मियाँ मुहम्मद यूसुफ साहिब मर्दानी के साथ हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब, ख़लीफ़ा प्रथम से इलाज कराने के लिए क़ादियान आया।

यह व्यक्ति सिलसिले का बहुत बड़ा विरोधी था और बड़ी कठिनाई से क़ादियान आने के लिए तैयार हुआ था। लेकिन उसने मियाँ मुहम्मद यूसुफ साहिब से यह शर्त रखी थी कि क़ादियान में मुझे अहमदियों के मोहल्ले से बाहर कोई मकान लेकर देना और मैं कभी भी उस मोहल्ले में प्रवेश नहीं करूँगा।

ख़ैर, वह आया और अहमदियों के मोहल्ले से बाहर ठहरा। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब उसका इलाज करते रहे। कुछ दिनों बाद जब उसे कुछ आराम हुआ तो वह वापस जाने लगा।

मियाँ मुहम्मद यूसुफ साहिब ने उससे कहा, "तुम क़ादियान आए हो और अब वापस जा रहे हो, कम-से-कम हमारी मस्जिद तो देखते जाओ।"

उसने इनकार कर दिया। मियाँ साहिब ने बहुत आग्रह करके उसे राज़ी किया। तब उसने इस शर्त पर मान लिया कि मुझे ऐसे समय वहाँ ले चलना, जब वहाँ कोई अहमदी न हो और न ही मिर्ज़ा साहिब हों।

चुनाँचे मियाँ मुहम्मद यूसुफ साहिब उचित समय देखकर उसे मस्जिद मुबारक में ले आए। लेकिन ख़ुदा तआला की क़ुदरत देखिए कि जैसे ही उसने मस्जिद में कदम रखा, उसी समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मकान की खिड़की खुली और हुज़ूर किसी काम से मस्जिद में तशरीफ़ ले आए।

उस व्यक्ति की नज़र जैसे ही हुज़ूर पर पड़ी, वह बेक़रार होकर दौड़ता हुआ हुज़ूर के सामने आ गिरा और उसी समय बैअत कर ली।

शेष ..

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad